धराशायी हेबाक समय

धराशायी हेबाक समय

(कविता मे कोरोना-काल)

तारानंद वियोगी

अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.

ISBN 978-93-88799-79-9
धराशायी हेबाक समय

पहिल संस्करण (सजिल्द) : 2021

मूल्य : 260.00 रुपए

प्रकाशक
अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.
सी-56/यूजीएफ-IV, शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II
ग़ाज़ियाबाद-201005 (उ.प्र.)
फ़ोन : +91-9871856053
ई-मेल : antika56@gmail.com
वेबसाइट : www.antikaprakashan.com

सौजन्य सहयोग
किसुन संकल्प लोक
किसुन कुटीर, सुपौल-852131 (बिहार)
फ़ोन : + 91-7004917511

आवरण चित्र : वंदना तोमर

मुद्रक : आर.के. आफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

DHARASHAYI HEBAAK SAMAY (Collection of Maithili Poems)
by Taranand Viyogi
Published by Antika Prakashan Pvt. Ltd., C-56/UGF-IV, Shalimar Garden Ext.-II
Ghaziabad-201005 (UP) India
Price : ₹ 260.00

डॉ. नीलाभ पंकज
आ समस्त कोरोना-योद्धा लोकनि केँ सैल्यूट-स्वरूप

एक-एक रोगीक जीवन लेल
अहाँ लोकनि लड़ैत रहलहुँ जंग
जेना भेस बदलि-बदलि क' ईश्वर
प्रवासी मजूरक बीच रोटी-पानि बिलहैत रहला

अनुक्रम

विवर सँ बहराइत छथि महाकाल

खडयंत्र

विवर सँ बहराइत छथि महाकाल
तिमिर निविड़ विवर सँ
क्रूर महाकाल

विवरक मुँहथरिए पर बसल छै मानव स्तनपायी
सट्टाक सँ ओकरा विवर मे घिचैत अछि
आ विवर बंद

की एना कहि क' टारल जा सकतै एहि विपदा केँ?
इतिहास केँ क्यो धन ल' क' घेरि सकल अछि
भने कतबो मजगूत जिगर रखैत हो!

प्रश्न तँ उठत बेर बेर
ओतय गेल किए रहय मानवप्रजाति?
विवरक मुँह लग?
पृथ्वी केँ कि आब कोनो साधंस नै रहि गेल रहै?
एत्ते टाक पृथ्वी आ कत्तहु जग्गह बचल नै?
तँ आखिर एत्ती टा पृथ्वी भेल की?
गेल कत्तय?

कहै बला तँ ईहो कहता
के सब दिन राज करय आयलए

सब केँ एक दिन जाना छै
मनुख हो तौं, पृथ्वी हो तौं?

मुदा ईहो मोन पाड़ब कोना छोड़ल जाय
जे अकालमिर्त सेहो एक टा चीज होइ छै!
जकरा गाछ खसि मरबाक रहै छै सैह चढ़ै छै गाछ पर
मुदा गाछ चढ़ब के छोड़ैत अछि?
छुटबो करत तँ तखनहि छूटत जंगल जखन शेष भ' जाय
सभ्यता लेल से जरूरियो रहै, शेष भ' गेल।
आब ई नै अइ पर कहिहक जे दुनू मे कोन बेसी जरूरी छै
पृथ्वी आ कि सभ्यता?
नै कहिहक
असभ्य कहथुन सब तोरा
देसद्रोहियो कहि सकै छथुन
हुनका सभक लेल सभ्यते बेसी जरूरी छै।

मुदा प्रश्न तँ फेर ओत्तहि नरायल
जे मानवजाति गेल कोना ओइ क्रूर विवर लग?

अइ मे खडयंत्र नै छै कोनो, के कहि सकैत अछि!

सभ्यता

जानवर सब मिलि क' रहैत अछि
हिलिमिलि क' रहैत अछि मनुक्खो
ओहो एक प्रकारक जानवरे छी, कहलनि समाजशास्त्री
मुदा सभ्यता केँ चाही बिलगाव
सभ्यता मिलनक शत्रु थिक
मिलनक विरुद्ध ओ मारक सँ मारक हथियार रखैत अछि
जकर विस्तार वायरस तक जाइत छैक।

सभ्यता जँ बचल तँ कोना बचत मनुक्ख?

आँखि

हम ओ किताब देखलहुँ,
चित्रक किताब
ओइ मे आर किछु नहि रहै
रहै केवल अनेक अनेक लोकक मुखाकृति चित्र
सबहक अलग अलग
जेना अलग अलग विधाता बनौने होथि सब केँ
सभक दुख सेहो अलग अलग रहै
क्यो एक टा झालमूढ़ीबला रहय जे ट्रेन मे घुमि क' समान बेचय
एक टा रहय पॉलिस बला, एक टा पानिबोतल बला
एक टा भिखमंगा रहय जकर रोजगार रहै माँगि क' गुजर करब

ओइ मे रिक्शा बलाक चेहरा रहै, ठेला बलाक
जे सूरदास खंजरी बजा क' गीत गाबय तकर रहै
एक टाक मुँहेंठ तँ हमर पड़ोसिया नकछेदी सँ मिलैत रहै
जे कपड़ा फैक्ट्री मे खटै छल, जे आब बंद भ' गेलै

लोकक तँ चित्र रहै सौ के करीब
लेकिन पन्द्रह टा केँ हम चिन्हैत रहियै
ई सब कोनो ने कोनो दिन हमरा संगत मे रहला
किछु हमरा दैत, किछु हमरा सँ लैत
बनला अभिन्न,
चिन्हार लोक कोना अनचिन्हार हेतै
मुदा हालत छल जे चित्र देखि किछु हम चिन्ही किछु भटकी

कलाकार जे छला सेहो हमरे संगत के लोक
कहलियनि—यौ, हम चिन्है छी आ भटकै छी
ई बालेसरे ने थिका आ ई सुबोध, ई संझा?
मुस्केला कलाकार, गछलनि हमर चिन्हास
मुदा एकर जवाब हुनका लग बड़ा जुलुम
किए हम चिन्हितो छी भटकितो छी

आँखि कान गाल ठोर संझा बुढ़िया के
लेकिन ओइ मे नाक लागल बिमला के, केश इजोतिया के

—अहीं चीन्हि सकैत रही कवि, आन नहि
अहाँ आत्मा मे उगल इजोत देखबाक पारखी छी
तेँ अहीं देखि सकैत रही
हम तँ नुका देने छियैक एक एक लोकक परिचय
लॉकडाउन मे के कानल कोना
के मुइल कोना, के तड़पल कोना
ई ओकर निजताक अपमान हेतै कवि
तेँ अइठाँ सब टा गड्डमड्ड छै

कानल, तड़पल आ मुइल ई सगरो देश,
तँ कोनो एक व्यक्तिक कानब
चिन्हास संगें हम कोना देखाउ
जिनका आँखि छनि से की नहि देखै छथि?

गड्डमड्ड

रहबाके लेल मनुक्ख आविष्कृत कयने छल घर
मुदा, सब गड्डमड्ड अछि
बाहर पशुवर्ग चरि रहल अछि फसिल
बाहर सरीसृप बील बना क' बढ़ा रहल अछि पहुँच
हेंजक हेंज शिकारी जाल बिछा रहल अछि
जागता पुरुष के नाश कोना हो
बाहर अछि आतंक कोरोनाक

आविष्कृत भेल छल घर रहबाके लेल
मुदा, समस्त संचार-संसाधन एक अही बात पर एकाग्र
सब घरे मे रहू
हम घर मे रहै छी

अहूँ हरदम घरे मे रहू
चेन तोड़ू कोरोनाक

घर अछि तँ ओहि सँ बहरायलो जा सकैए
कते केँ तँ छोड़बा लेल होइ छनि घर
अधिकतर तँ घरो मे रहि क'
घर मे नहि रहैए लोक
कते घर तँ चलि गेनिहारक नाम जपैत रहैत अछि
युग-युगांत धरि
जेना पोरबंदर मे गांधी जीक घर

घर तँ रहबाके लेल भेल छल आविष्कृत
मुदा, सब गड्डमड्ड अछि।

एकांत मे समय

नै मालूम
एकरा एकांत कहबै
कि की कहबै

लॉकडाउन मे कतहु नहि बहरा रहला अछि भैयारी
आदंक टैटू जकाँ हुनकर चेहरा पर गोदाएल छनि
दम घुटैत छनि घर मे बंद रहैत
बाहर निकलै लेल प्राण बेकल छनि

बाहर निकलता तँ लगतनि ओहो कोनो लोक थिका
क्यो पुछतनि हालचाल, क्यो सुनेतनि अनुभव
पूजीपति रिमार्क देतनि
गरिबहा करतनि खेखनी
ककरो संग चौराहा पर जा हाहा होहो करता
क्यो करतनि नमस्कार

ई सब हेतनि तखने जा क' लगतनि
हँ, हमरो व्यक्तित्व अछि
हमहूँ छी कोनो लोक

भैयारी केँ धन-दौलत पूरे देने छथिन भगवान
एक व्यक्तित्व छोड़ा क' सब किछु देने छथिन
व्यक्तित्व दै छनि हुनका ईश्वर नहि, बाहरक दुनिया
घर मे बंद रहता तँ समय तँ कटिये जयतनि कोनहुना
चेहरा नै कोनो तकर बनि सकतै
भैयारी अपने नै तँ समय कतय?
आ कि ओकर चेहरा?
बाहरी दुनिये सँ अछि समय
बाहरे सँ छथि भैयारी

भैयारी माटि के पाकल बरतन थिका ठोस
मुदा भीतर पूरे खाली
बाहर निकलता, लोक देखतनि
तखने जा क' हेतनि व्यक्ति-परिचय
अरे वाह, सुंदर डिजाइनदार सुराही थिका ओ!

चंडलबा

जुलुम देखियौ, ओइ स्त्री केँ मारलक चंडलबा
जकरा सौंसे समाज हीरा कहैत रहय
समाज मे फहराइ चंडलबाक पताका
ओही महिलाक प्रबंधन सँ

ओही स्त्री सँ जनमल ओकर बच्चा सब
जतय गेल ततय नाम केलक
पढ़लि-लिखलि गुण आगरि, करुणाक सागर
कतेको बेर बाजल हैत चंडलबा अपनो

पूर्वजन्म मे छलि ई हमर माय

लॉकडाउन मे सगरो दिन घर मे रहैए बन्न
देखैए स्त्रीक तलता
जे ओकरा सँ हजार बड़ बेसी छै, जटिल छै
सगरो दिन पढ़ैत रहैत अछि पिंगिल
लाख दंद मे पड़ल रहैत अछि
हजार बात केने रहै छै उद्विग्न

संकट बाहर छै
बाहरे छै कोरोना
मुदा चंडलबाक दुनिया सेहो बाहरे छै
घर मे अछि बन्न तँ बुझू दंड भोगैए जानलेवा
कोना ऋषि-मुनि जंगलक गुफा मे करैत हेता तपस्या?
कोना वैज्ञानिक लोकनि डूबल रहैत हेता दुनिया सँ बाहर
कोना कवि लोकनि कविता लिखैत हेता
अगोचर केँ शब्द मे बान्हि?

बात की, तँ बात किच्छु नहि
चाय मे चीनी छलै कनी तेज
ततहि सँ बात शुरू भेलै
महिला कपड़ा सफाइ मे लागल छलि
धिया-पुता पढ़ै छल, तकरो पर ओकरे ध्यान छलै
हजार बात छल, लाख छल दंद
सब टा ओकरे कपार

ओह
कत्तय सँ आबि बथायल छल चंडलबाक नचारी
आ कत्तय आबि बेकसूर केँ घातल
धिया-पुता हाँ हाँ करिते रहि गेल
मारि बैसल स्त्री केँ चंडलबा।

पैंसठ पार

अपने घर मे अपने नुकायल छथि जोगीलाल
घर मे रहता बंद तँ जमराज केँ पहुँचब कठिन रहतै!

चारू दिस छै प्रचार
पैंसठ पार के आब बचब मश्किल
उमर देखि घेरै छै कोरोना
योद्धो लोकनि नवतुरिये केँ बचबै छथिन
रहलै सुविधा तँ देखल जेता बुढ़ानुस

जोगी केँ तेसरें पैंसठ पार भ' गेल छनि
मश्किल छनि आब

ओ पोता संग खेलायब धरि छोड़ि देने छथि
बेटा संग गपियायब धरि
भरि भरि दिन पड़ल रहता ओछाओन पर
करैत रहता आंह-ओह
बेटो आब पुतहुए मारफत जनै छनि कुसल छेम

जमराज तँ मारतनि, जहिया पकड़तनि
जोगी केँ तँ पैंसठे मारि देलकनि अछि कोरोना-काल मे!

सब सँ नीक बात

दुख कतबो भोगय पड़य गरिबहा केँ

भोगले देह भोगि सकैए दुक्खो
जतेक भटकय पड़य दर-दर
जत्तेक निछावर करय पड़य प्राण
सब सँ नीक बात ई

जे कोरोना बीमारी गरिबहा संगे पैदल नहि आयल
आयल हवाइ जहाज सँ
मोटका मोटका आँखि बला सब धोधि बला सब
अनलनि कोरोना ग्लोबल विलेज सँ हकारि

बात बात मे कहल करथि मठोमाठ
—गरीब रहैए गंदा, पटबैए बीमारी
गरीब सौंसे देस लेल कलंक थिक
तेना कहथि मठोमाठ
मानू देस लबानीक फैक्ट्री मे बनल कोनो हाइटेक माल हो

करेजगर सँ करेजगर केँ जे दियय थरथरा
काज तँ एहन एहन करैत रहल सब दिन गरिबहे
मुदा, सब सँ नीक बात ई
कोरोना जे आनल गेल से हवाइ जहाज सँ।

के कहि सकैए?

प्राण प्राण हलकान
मृत्यु सँ पैघ मृत्युक भय
सबा अरब-डेढ़ अरबक ई देश
आ एक एक जान निभरोस
ने रोजगार अनामति ने ज्ञानेन्द्रिय स्वतंत्र
तै पर सँ कोरोनाक डर कि जानि नहि
कखन कतय के मरतै!

मंदिर मे सुटकल एक एक मुरूत, मने से देवता
बपहिया बलें पंडा लोकनि करबो केलनि हुलहुल
खोललनि मंदिरक पट
मुदा अपनहि पट-पट मरय लगलाह
फेर ढाठल गेला मुरूत, मने कि भगवान

मंदिर फेर बंद कैल गेल
टोटल लॉकडाउन, ईश्वर समेत

पसरल जा रहल अछि दिन दुना राति चौगुना,
के जानय कतबा पसरल जा रहल अछि
सही सूचनोक तँ कोनो उपाय नहि,
कते खा क' हेतै एकर अंत, के कहि सकैए?
लाख? करोड़? कि कते, के कहि सकैए?

ग्लोबल विलेज

इटलीक सीमा फ्रांस लेल बन्न
फ्रांसक सीमा जर्मनी लेल
जर्मनीक सीमा अमेरिका लेल
अमेरिकाक सीमा सभक लेल बन्न

सब अपना अपना घर मे कैद
पहिने जखन ककरो किछु होइ तँ सब दौड़य
सब पठबय अपन अपन संसाधन
आब सभक सीमा सभक लेल बन्न
सब अपना अपनी मे सीमित
अपने कानै मे सभक दिन-राति पार

देखू तमाशा!
ई भारी भरकम ग्लोबल विलेज तँ
पचीसो साल नै टिकि सकल।

मनुक्ख जनैत अछि अपन अंत

इतिहास उनटा क' देखू
बरु आब तँ इतिहासो उनटेबाक नहि काज

गूगल कहि देत समुच्चाक समुच्चा खिस्सा

सौ बरस पहिने ई भेल छल, ओ भेल छल
चलल छल प्लेग, चलल छल आरो अनेक अहिना सर्वत्र
प्लेगक मार्मिक मार्मिक अनुभव
जहाँ तहाँ साहित्यो मे छिड़ियायल भेटत
अहिना निरर्थक भेल छल चिकित्सा-तंत्र
अहिना शासन-प्रशासन आयल छल पेश
अहिना असहाय रहय मनुक्ख तहियो, अहिना निरवलंब

एहि सौ बरस मे कते बदलल समय
आइ चिकित्सा अपन विजयक डंका पिटैत अपनहि
आइ सौभाग्यशाली देश विश्वगुरु
आइ लोकक हाथ मे दू टा पाइ, रहबा लेल घर
मुदा आइयो मनुक्ख असहाय ओहिना
मनुक्ख निरवलंब ओहिना

कहै जाइ छथि वेत्ता लोकनि
सौ साल पर अबैत रहल अछि एहने महामारी
अइ बातक अपन साक्ष्यो छै,
मुदा इहो कहै जाइ छथि वेत्ता लोकनि
आब हरेक दस साल पर आएत,
मोन राखू, हरेक दस साल पर।
साक्ष्य नै छै एहि भविष्यवाणीक, ने छै तर्क
मुदा एक एक मनुक्ख केँ लागि रहलैए पक्का
जे वेत्ता लोकनि ठीक कहि रहल छथि

सत्य जे, तकरा जनैत तँ जरूर अछि मनुक्ख
भने क' नहि पाबय स्वीकार स्वार्थवश कि अंधकारवश
थिक तँ ओ ब्रह्माण्डेक एक पिंड
जनैत तँ जरूर अछि अपन अंत
थरथर कँपैत अछि।

बाबा-पौत्र संवाद

—बाबा यौ, जखन मरि जेतै सब क्यो
 तखन के बचतै?

—बचतै बौआ जंगल, पहाड़
ओइ मे करोड़क करोड़ के गाछ
ओइ तर मे अरबो खरब के कोयला, लोहा
ओइ मे झरना कातक औषधि
आ, मरतै लोक तँ कोनो सौंसे दुनियाक थोड़े मरतै
जतय जतय बचत लोक
ओतय ओतय जा क' बिकत अडानीक प्रोडक्ट

—बाबा यौ, सब मरतै तँ ओहो मरि जेता?
—धुर बूड़ि, ओ कतहु मरय!
पाइबला सब देस छोड़ि दै छै रौ
अतबो नै तोरा अकिल भेलौ!

बाजलि सपना

आउ मीत, आउ
हम सब खूब गहिया क' करी गराजोर
बिसरी कि मानवीय स्पर्श खतरनाक छै कोरोना-काल मे
अनठाबी जे हमरा सँ पटि सकैए अहाँ केँ
कि अहीं सँ हमरा

कते दिन पर भेल अछि भेंट
तरसैत रहल छी अइ तमाम समय
ओइ मीत लेल
जकर भेटनाइ समय केँ दैत हुअय चेहरा
स्पर्श नै, संवाद नै

तँ कथी छी जीवन?

कते विद्रूप छै ई समय
जखन लोक लग लोक नै
जखन कते जड़मति करैत विलाप
—ठीक छल पूर्वजक बनाओल अस्पृश्यता नियम, ठीक छल
जखन दिल मे आह
मुदा आह के राजदार नै

बहुत जिबिये क' की करब मीत हम-अहाँ
जखन कि देखि रहल छी
बेकसूर सब केँ नित्तह जाइत मरघट

आउ आउ
शाश्वत होइ कनी
गहिया क' करी गराजोर।

रूपक

रुकि तँ गेल अवश्य कोरोना-काल मे बियाह-सादी
मुदा तते रुकियो कोना सकै छल
देखल
मास्क पहिरने वर-कनियाँ
मेन्टेन करैत यथोचित दूरी
पहिरा रहल छथि एक दोसर केँ वर-माला

दू गज दूरी छैक जरूरी
मुदा ई दृश्य देखल
तँ लागल
अपना जुगक सब सँ महान रूपक देखि रहल छी।

लॉकडाउन मे मजूरक पैदल घरवापसी

कौतुक

केवल एगारह किलोमीटर बचल रहै आब गामक डीह
पाँच सौ तिरसठ तँ ओ आबि चुकल छलि
तत्तय आबि क' मरल बचिया।

कौतुक होइ छनि सुधीजन लोकनि केँ
उमंगो तँ कोनो चीज छियै
आबिये तँ गेल छल गाम, किए छोड़लक हिम्मत
किए मरल बचिया गामक लग आबि
—कौतुक होइ छनि।

उमंगक सीमा हुअए हरदम
बिना कारणक आशावादी नै बनल रहि सकैए देस
—बनल तँ अछिये
तखन कहू जे सदा सर्वदा नै बनल रहि सकैए।
बचिया केँ लागल हेतै भूख
बचिया केँ रछछबा बला प्यास लागल हेतै
एन एच धसतिहै तँ अबितय अगिला कोनो गाम
ओतय चापाकल भेटतिहैक तक्खन पिबितय पानि
एन एच पर कतय पाबी चापाकल?
गरीब केँ पानिये पियाबक लेल भेल छै विकास की?

उमंगे पर तँ तखनहु दौड़ल जाइत रहय बचिया।
छुच्छे उमंगक बल पर अहाँ केँ दिल्ली सँ दरभंगा आबि हैत?
बिसरि जाउ
बहुत दूर छै अखनो सभ्यता गाम सँ!
गामक मौअति शहरे मे गेने भ' सकै छै
से भैयो रहलै-ए
से मुदा अपन होइ छै, होउ
के ओकरा पर दैए कानबात
जाबे दुर्दिन नै घेरि लै, के दैए कानबात?

एगारह किलोमीटर पर मरि गेल बचिया
एगारहे कहै छियै से गलत कहै छियै
ओइ मे पाँच सौ तिरसठ आउर जोड़ि लियौ
बारह सौ आउर,
सतरह सौ आर
गाम सँ ततबा दूर छै सभ्यता एखनो।

बचियाक मरबा पर मुग्ध नै होउ
ओइ पर कानू
गाम सँ दूर छै सभ्यता एखनो
शहर मे रहिनहि की?
दूर छी अहाँ सभ्यता सँ तखनो
सभ्यता बिखधर नागक बिख हवा मे रखैत अछि
काँखतरक केश मे रखैत अछि चिल्लर के अंडा जकाँ मनुखता
ओहो चिलरबे एते तुमुल स्वच्छता बीच जिबैत रहि सकथि तँ रहथु

कहलहुँ ने
छुच्छे उमंग पर दिल्ली सँ दरभंगा नै पहुँचल जा सकैए
एगारह किलोमीटर पहिनहु खसि सकैत अछि विकेट।

दस चंगला पर एक बंगला

एत्ते एत्ते लोक केँ चलैत अबैत देखै छी
बाले-बच्चें लत्ते-पत्तें
एते लोक केँ देखै छी हकोपरास
एते लोक किए घुरय चाहै अछि गामे
शहर तँ ओकरे बसायल रहै !

नै छै जगह शहर मे गामक लेल
बुझनिहार तँ कैक जुग सँ बुझै छथि बात
शहरे नहि मानैत अछि
दस चंगला पर ओकरा एक बंगला चाही
चंगलाक सप्लायर के तँ गाम
गामे नै बुझैत अछि जा बिपति नै पड़य

एत्ते एत्ते लोक आबि रहल अछि लत्ते-पत्तें
पैदल चलैत बुलैत, कुहरैत, मरैत
बुझियौ जे गामक गाम आबि रहल अछि!

ई सब फेर जेतै शहर?
फेर शहरे जेतै?
जेतै ने कोना अवश्य जेतै
ओकरा दस चंगला पर चाही एक बंगला
संख्या पुरौतै तखन कोना?

अखनो

भूत प्रेत पिशाच जिन्न चुड़ीन
ब्रह्मराक्षस आ चंठबैताल
एहि सभक स्मृति सँ भरल अछि लोकसाहित्य
एकर निवारण लेल

जानि नहि कते कते देबा आ मनुखदेबा आविष्कृत भेला
कतहु काली खेहारलनि पिशाच केँ
कतहु भूतप्रेत केँ हनुमानजी
कतहु कतहु तँ छोटे मोटे भैरवलाल
अपन मुदगर सँ मारि खसौलनि
सौ–हजार ब्रह्मराक्षस

ई सब मुदा आब बीतल जुगक बात भेल
अइ पर आब के करत भरोस
अदृश्य देवता सब किछु क' सकता
आ से कयने सुरक्षित बनत लोक
के करत विश्वास?

भूत प्रेत पिशाच जिन्न चुड़ीन
ब्रह्मराक्षस आ चंठबैताल
सभक सब विराजित अछि आइ राजगद्दी पर
आ लोक पड़ायल चल जा रहल अछि
माथ पर उघने मोटरी पोटरी
कन्हा पर बैसौने बालबोध
पयर मे ओझरेने प्लास्टिकक बोतल ताप–रक्षाक लेल
शीतल जल के स्मृतिये टा बचल जै बोतलक धाजा मे,
चलल जा रहल अछि अपन अपन गामक दिस
वश रहलै तँ गामे जा क' मरय चाहैत अछि

गामो मे शासन छै अही भूत प्रेत पिशाच जिन्न चुड़ीनक
पहिने काली हनुमान भैरव छला गद्दीनशीन
तँ बालापीर आ छेछन महराजो क' देल करथि गोहारि
आब गद्दी पर छै भूत प्रेत पिशाच...

मुदा लोक तैयो अपन गामे जाय चाहैए
किछु आर शक्ति होइक जनु बचल गामक लग अखनो
कोनो सूक्ष्म, प्रच्छन्न शक्ति!

धरतीक बचल काज

मूड़ी नमरा नमरा क' हियासैत अछि गामक धरती
विदा होइ गेल अभगला सब कि नै, कते दूर आएल
कते बंदा बचल अछि एखनो धरि चलायमान?
मूड़ी नमरा नमरा क' हियासैत अछि गामक धरती
देशबंदी मे गाड़ी-घोड़ा एक्ट्री-फेक्ट्री सब बंद छै
तैँ ओकरा सूझियो जाइत छै अग्गह बिग्गह परदेस

अभगला सब केँ सेहो हियास छै गामे पर
ओ मरय चाहे जीबय, गामे आबि क' चाहैए, हो
गाम पर लाठी ल' क' तैयार छथि मुखिया-सरपंच
अरगड़ा नियत भ' क' तैयार छै
हुनका लग बचल अछि यदि आब कोनो काज
तँ शासने बहाल राखब टा बचल अछि
होहकारी टा देब कि ओ सर्वोपरि थिक
एक सँ एक कर्मठ अधिकारी तैनात छथिन
ढठ्ठा लगा क' ठाढ़ छथि मुखिया-सरपंच चौकीदार समेत

धरती केँ मुदा अखनो ओतबे काज बचल छै जतबा तहिया रहै
ओ मूड़ी अलगा अलगा क' तकैत अछि अभगला सभक बाट
विदा होइ गेल कि नै, कते दूर आएल, कतबा बचल चलायमान?

हबोढकार

हबोढकार कानि रहल अछि परभूक स्त्री
एक तँ ओहिना देह पर गोस नै छै
तै पर सँ भरि पेट छै बच्चा
अथबल सासु से ओम्हर कानि रहल छै गोहाली मे

परभू छै अखन रस्ता मे

लौकडौन मे बंद भ' गेल समुच्चा दिल्ली
पयरें चलि देलक अछि गाम दिस
देह मे हूब नै छै ओकरो
कनियें दिन पहिने बोखार सँ बचल अछि
सभक विचार भेलै चलि आ गामे
तुरिया सब के हेड़ मे चलि पड़ल अछि ओहो

रस्ता मे बेकसूर के मारलकैए पुलिसबा
ओधबाध क' देलकैए
डेंगूक झमारल देह
दैव हौ दैव, कोना मारल गेलै ओइ कसैया केँ

हेड़ के क्यो नौजवान गाम केलकैए खबरि
आ तखनी सँ कानि रहलैए परभूक स्त्री
की हेतै अइ स्त्रीक जकरा देह मे दम नै
ओइ बच्चाक की हेतै जे एकरा पेट मे छै
की हेतै परभू के, ओ मरि गेल की?

दुर्भिक्षकालक ई कविता लिखैत
सालैए बस दुइये टा बात
एक तँ स्त्री केँ चुप करेनहार नै कियो नै
दोसर ओकरा मुँह सँ एक्को टा गारि नै बहरा रहलैए!

ई सब

अंत्यज छला, शूद्र महाशूद्र छला
मुदा बनय चाहथि ब्राह्मणधर्मी हिंदू
बहुसंख्यक के गुमान लेल लालायित
अपनो केँ बहुसंख्यके बतबथि

दर दर के ठोकर खाइत

झेलैत जनम जनम के जहालत
ई सब जे चलल आबि रहल छथि पाँव–पैदल हजारन कोस सँ
ई नै बूझब जे मीयाँ मुसलमान आबि रहल छथि
सब बहुसंख्यके छथि, सब अपने लोक थिका
शूद्र महाशूद्र गरीब थिका तँ अपन औकात मे रहता कि ने
आबि रहल छथि पाँव पैदल

चलब

चलैत रहह बहादुर
खसह पड़ह मरह लेकिन चलैत रहह
बीझ लागि गेल देसक विवेक पर
अपंग भेला वीर बाँकुरा बहादुर सब
न्यायपतिक ज्ञान हरण भेलनि
ने बचलनि ब्राह्मण मे ब्राह्मणत्व
क्षत्रिय मे क्षत्रियत्व नहि बचलै
देश के आब कोइ माय बाप नहि
ककरो पुकार पर ठहरत क्यो से लोक नहि आब

आब ने धर्म बचि गेल धर्म ने ऋण बचि गेल ऋण
आब ककरो उठा क' ठाढ़ करैबला क्यो नहि
केवल एक आदमी देलक अछि हुकुम
आ हुकुम द' क' नुका रहल अछि
मुदा, अइ देश मे आब क्यो मायक दूध पीने जवान नहि
जे करय चीत्कार आ फाटय धरती
नहि, आब ककरो असरा नहि
चलह बहादुर, जतबा चलि सकह
पाँच हजार बरस सँ चललह अछि
के चलल अछि पिरथी पर तोहर समान
चलले देह चलै छै जी, चलह

देखि रहला अछि ब्रह्माण्ड भरिक देवता, राक्षस, किन्नर, गन्धर्व
अजूबा दृश्य देखि रहला अछि
कहियो ने भेल छलै ने सोचनो छल क्यो
चलह बहादुर, आब तोरे चलने बदलय तँ बदलय काल।

ईश्वर

अही देसक जँ पूर्व बसिन्दा होथि ब्रह्मा-विष्णु-महेश
आ कि दुर्गे महरानी सिंहवाहिनी, अष्टभुजाधारिणी
राम के नाम खूब लै छी हमसब, तँ हुनको शामिल क' लियनु
जँ ई लोकनि चराचर मे अखनो कतहु होथि बिदोमान
तँ कि ओहो सब अइ देसक नागरिके जकाँ
खराब भ' गेल हेता?

कि आब करुणा हुनको लोकनि मे विलुप्त?
न्याय कि आब हमरे सब जकाँ हुनको?
आ कि हमरे सब जकाँ
हुनको नै चलि सकैत कोनो पुरुखारथ?

तँ कि ओहो हमरे सब जकाँ कनैत हेता अरण्य मे कतहु?
आ कि भेस बदलि क' एन एच कात मे रोटी-पानि बँटैत हेता?

हाकिम

बस बोर्डर पर लागल
बोर्डर पर मजदूर सब कलहन्त करैत

जमजम करैत अछि सिपाही सब
अइ सिपाही केँ कम क' क' नै बुझियौ
सन् सत्तावन मे मर्डर जे केने छल बीस लाख पब्लिक के

ई नै बुझबै जे अंगरेज साहेब बहादुर सब छला
यैह सिपाही सब केने छल ओ घटना
ओकरा कम क' क' नै बुझियौ

बस बोर्डर पर लागल
हाकिम देतै आज्ञा तँ बस पर चढ़त मजदूर
मुदा, हाकिम आज्ञा देतै कोना ?

कलहन्त करैए मजदूर
जमजम करैए सिपाही।

असमय झरि झरि जा रहल अछि फूल

आखिरी फगुआ

जाहि दिन एलहुँ गाम
ओही साँझ बैसलहुँ तारास्थान पाकड़ि वृक्ष तले
दस बजे राति जखन बरसला बादरि
बड़ कठिनें बरसल छला एहि जड़काला
से नीज ओही दिन बरसल छला
उठलहुँ पाकड़ि तर सँ आ फूल-माला दोकान जा बैसलहुँ
दोकान उसरल छल, चौकी मात्र विद्यमान
ताहि पर उजरा फ्लैक्स बिछाओल
खूब जमल एगारह राति धरि
मयंको छला गदगद
कहलियनि—सब कथू केँ चाहिऐक अभिव्यक्ति हौ,
एहि चौकी बनल काठ केँ सेहो
ईहो तँ संततिये छल कोनो वृक्षक,
गाम केँ अभिव्यक्ति चाहिऐक
आ एक-एक बसिन्दा केँ सेहो,
हौ जी, स्वयं तारा केँ कि नहि चाहियनि?
ओही दिन तँ कहै छली महामाया—
एहन जोगाड़ करह जे आरती बेर मे क्यो क्यो
स्तुति सुनाबय दू चारि जन,
घड़ीघंट सँ जनु नहि होइत छनि अघान ने मर्मक अभिव्यक्ति

बुद्धक परिवारी थिकी
नहि होइत छनि संतोष केवल कर्मकांड सँ,
अर्थ बनि क' फूट' चाहै छथि शब्द शब्दक भीतर सँ
फूट' चाहै छथि बोध बनि क'
भक्त जनक ब्रह्मंडल सँ।

दोसर दिन मयंक गेला हत्ता
काटि अनलनि एक टा बाँस
तकर चारि खुंडी मे सँ एक हमहूं उघलहुँ,
कहलनि—बाँसक खुट्टा लागत जाफरी मे
पुरना खुट्टा सड़ल तँ धात्री-तरुण भेला बेपर्द,
कते जतन सँ रोपल गेल छला बाल धात्री
वत्सल हृदयक अंगनइ मे
आम, सिंगरहार, नीम आ धात्री
पाँचम जन अरहूल सार्वकालिक
यैह भेला पंचवटी वत्सलेश्वर,
निज धुरखेल दिन रक्षित कएल गेला धात्री तरुण।

ओइ दिन हमरा लोकनि पोखरि मे सेहो धंसलहुँ
पुरना मसहरी के बनल जाल नेटदार
तकरा धारण केलनि सागर, प्रकाश
दस बेर करीब छानने हेता
बहरेलनि एक टा ढेरबा चेंगा महराज,
लोभ तँ रहय जे बड़ माछ अछि तँ टेबी,
जँ अहीं एक भेलहुँ अछि उत्सर्ग शिकारी लेल
तँ हे चेंगा महराज, जाउ अहूँ भीतरे
आनंद करू, कुदकू पोखरि मे गुरुप् गुरुप्।

फगुआ दिन हम सब घुमलहुँ सौंसे गाम
चौक पर जा क' कोसीबान्ह
आ बजार पर द' क' कुमोदक गृह वाया रामशाला
पचासो टा लोक भेटला होरी है होरी है करैत

बीस टा जुबक रा-रा मे सेहो रहथि
रा-रा की, रारा-नुमा
नोटबंदी सँ तँ आब जा क' उबरल कहुना पाबनि-तिहार
मुदा शराबबंदी सँ उग्रास नहि,
कियो कहलनि ई खिस्सा—
दारू पी क' हो-हो करैत रहथि निशान्त अमीन
कि क्यो दरोगा केँ बजा अनलकै
अड़ि गेल जे हम एसपी को फोन करते हैं,
दारू पीबाक जुर्म मे जेल गेनिहार
पहिल वीर बहरेला निशान्त अमीन,
फगुए मे क्यो बजै छला—
रा-रा के मल्लयुद्ध मे आब कहाँ पाबी तज
तज दारू मे छलै, ताड़ी ओकर विकल्प नहि
भाँग तँ किन्नहु नहि, ने गांजा
फगुआ मे आब कतय तज पाबी जोगी भाइ
फगुए मे क्यो कहै छला।

केदार कपिल कहलनि दिवाकर बबाक खिस्सा—
बेटी के केने छला बियाह
नववविाहिता चतुर्थी प्रात बहरेली अहलभोरे
फुलडाली लेने भगवती स्थान पूजाक हेतु
बड़ी जोर सँ डँटलनि बाबा—
विधवा जकाँ कतय चललेंहें पूजा करय भोरेभोर
घर मे रह, अवसर मोताबिक कर पूजा
ओझा भेलखुन एखन देवता तोहर,
स्त्री-पुरुखक प्रीति अइ समय मे पूजा सब सँ पैघ
केदार कपिल कहै छला।

सँझुका कीर्तन मे बड़ा घटाटोप संग शुरू केने छला गणेश महतो
अपन फेवरिट फागु
मुदा, पतिया लिखत मोर फाटत छतिया के टाहि केँ सम्हारैत
अपने स्वरें फाटि गेला गणेश,

पतिया आब लिखैए के जे छतिया फाटत
से मुदा दोसर बात
कीर्तन मे तँ कहले जाएत।
जाइत-जाइत परचारैत गेला प्रेमकांत साधक
रौ बाबू, गाम आएल छें तँ एक दिन
चैताबर-समारोह सेहो कराइए ले,
के जानय, आब कते दिन रहत ई सब चीज!

गामक बंद घर मे कहियो बहुत दिन बाद

मासोमास बरस दिनक बाद जखन घुरल छी अपन घर
यात्री जीक घर मोन पड़ैए
घर ओ असल मे गोकुल मिसरक छल
मुदा बसिन्दा तँ ओइ मे यात्रिये छी छला
पंचवर्षीय ठक्कन मिसर
अपन ओइ उजड़ल उपटल जंगल बनल घरक वर्णन बाबा
रतिनाथ की चाची मे केने छथि

घुरल छी हम अपन अधेड़ उमेरक घर
मोन पड़ल अछि हुनकर नेनपनक घर

स्मृति होइत छै कालातीत
भने बाँकियो सब चीज कालातीते होइत हो
आ समय मात्र मनुख केँ बूढ़ बनेबाक लेल माया हो कोनो
जेना धर्म

रतिनाथक चाची मे लिखने छथि यात्री जी
प्रथम नेनपनक स्मृति मे बसल अपन घर
जतय हुनकर जन्म भेल रहनि,
घर रहै एहन जै मे रहनिहार पशुपक्षियो केँ भय
जे अगिला मास ई घर रहै जोग रहय नै रहय

कोना बनि जाइत हेतै एहन घर?
ओकरा मे रहब पहिने छोड़ैत हेता घरबे लोकनि

गोकुल मिसर, यात्री जीक पिता
छोड़ने हेता अपन चंचल चित्तक कारण
भ' सकैए जे ककरो अपन नोकरी दुआरे छुटि जाइत हेतै
एहनो भ' सकैए जे क्यो अपन अमल दुआरे छोड़ि दैत हेता
जेना कबीरदास कहै छला जो घर जारय आपनो...

गोकुल मिसरक घर छोड़ब
सच्चो के घर छोड़ब नै रहय
ओ रहय—घर मे छीहो आ नहियों छी

हम बरस दिन बाद घुरल छी अपन घर
घर बनल जंगल
चौबगली के सब टा गाछपात के उतरन एतही जमा
परत दर परत दर परत
निच्चाँ सड़न, भुसभुसाहटि, माटि बनल
ऊपर ताजगी भरल अरियाल-खरियाल
मूस केने उपद्रव भरि भरि पोख
सबिकहा छोटकी कोठली सब मे मिलिमीटर के दर सँ धूर गर्द जमल
कतरल कुतरल सब टा कपड़वस्त्र जे बाहर मे छल
घर मे अव्यवस्था, घर नीक नै लगैत देखाइत रत्ती भरि
घर बनल जंगल

चलन एहन छै जे जंगल सुनने सँ हरियर हरियर सब किछु
देखार पड़ै छै, समथिंग रूमानी
जंगल से नै थिक
जंगल छी भय जे अगिला पल ओकरा संगे किछुओ भ' सकै छै
जेना जंगलराज

अइ ठाम सैह छल
घर लगै छल हमर जंगलराज

हम जँ नै रहब, मने छोड़ब
तँ क्यो तँ रहत एतय
ताला राखब बरख दिन धरि लगा क'
किछु तँ हैत एकर परिणाम
घर बनत जंगल

लॉकडाउन मे बरख दिनक बाद
खोललहुँ अछि अपन बंद घरक ताला,
पुछै छथि आत्माराम—यैह थिक हमर घर?

मरब तँ हम नहि जानि कहिया

जाहि धरती पर लेने रही जन्म
तकरा बाबू भैया लोकनि
जुग जुगान्ते सँ केने रहथि सकपंज
मुदा धरती तँ कहियो धुकधुक करब छोड़य नहि
से लेबय सीखि गेल रही साँस बिना ककरो सिखौनहुँ

भरोस रहय
अपन धरती गुलाम अछि तँ चलह
देश तँ आखिर हमरो छी
नहि एतय तँ ओतहि
कतहु तँ मयस्सर हैत फेफड़ा भरि साँस

जे लोकनि हमरा गरियाबै छथि
जे किए हम हिंदी लिखै छी
हुनका भरोस होइन जे हिंदी हम की लिखब
देशक श्वास लै छी मातृभूमिक विरह मे

मुदा, आह माते
आइ तोंहू गेलह!

मरब तँ हम जानि नहि कहिया जा क'
मुदा बचब हम कोना बिना साँसक?

सब जा रहल अछि

—आइ फेर एक जनसरोकारी पत्रकारक निधन भेल
काल्हि एहने एक वैज्ञानिक मुइल छला
परसू भिन्न भिन्न कलाक चारि उद्‌भट कलाकार
साहित्यकार आ डाक्टर तँ रोजे मरि रहलाहे
तहिना, सरकारी कर्मचारी

असमय झरि झरि जा रहल अछि फूल
कोरोनाक अइ दोसर लहर मे
के परिचित कखन मरि जेता, कोनो ठेकान नहि

—भकरार फूल सब जे झरि रहल अछि नामी नामी
गनतीक लोक थिका ओ
मुदा जंगल के फूल जकाँ असमय जे मोचरा रहला अछि अनगिनती
तकर के हिसाब रखैत अछि?
ओकर अपने टा समाँग ने
हाय रे दुष्काल!

—अइ देस मे आब पूजीपतिये टा बचतै
आ कि ओकर प्रधान अप्रधान सेवक।

ई कोना मरि गेल

अहाँ सँ कहियो किछु माँगलहुँ नहि
तैयो अहाँक मन मे बनल रहल खटका
—अरे एकरा अहाँ कम नै बुझियौ

मुदा जखन हम विदा भेलहुँ,
अहाँ केँ भेल अरे ई तँ ठीके कहियो किछु नै माँगलक
बन्धु लोकनि केँ धेने रहलनि आशंका
देखब जरूर ई कुफ्फर करत कहियो कोनो दिन
कहियो जरूर ओहि दौगलाक घर जा घाड़ नामत
कहियो बदला लेत हमरो सँ जे कि होइतो छै उचित

कते सुनने छलहुँ हमरा बारे मे एहि कान ओहि कान
घनेरो बेर हम भेल होयब सोझा एहि ठाम ओहि ठाम
सब दिन अहाँ रहलहुँ सशंकित
—अरे एकरा अहाँ वैह नै बुझियौ जे देखाइत अछि
विदा हैब हम तँ शंका हैत निर्मूल
मुदा तैयो कोनो कोन मे हैत जे साइत भाग्ये बचौलक अहाँ केँ

विदा हैब जखन हम, अचंभा मे पड़ब अहाँ
अरे ई कोना मरि गेल ई तँ अही बाटें जाइ छल भोर साँझ
मोड़ पर दछिनबारी दिस पान खाइ छल
पान बला संग हँसै छल हो हो
ने उत्तर रुकै छल ने दक्षिण
वधिक केँ चिन्है पर्यन्त छल, ई कोना मरि गेल!
कहियो माँगलक नहि किछु, ने कतहु कुफ्फर केलक
ई कोना मरि गेल!

जिनगी

एत्तह जखन मृत्यु
माँगतह तोरा सँ
तोहर जिनगी

जिनगी जँ रहलह नै संग मे बाबू,
कतय सँ लाबि क' देबहक ओकरा, बाजह!

नहि एलह अछि
अखन नहि एलह अछि मृत्यु
किए एना रोज रोज मरै छह?

जोगी हौ
मृत्यु एतह
तँ सब सँ पहिने
जिनगिये मांगतह।

कविता मे आबि रहल अछि नीक नीक शब्द

समयक संग विश्वासघात

भाषा मे आइ–काल्हि चलि रहल छै
पाठशाला चलू कार्यक्रम अर्थात शिक्षाक माध्यम हो भाषा
आशंका राखैत जे ई सब किछु होइबला नै छै, तैयो
एकरा कम सँ कम दवाब तँ एक टा जरूर कहबै
जकरा बनाएब कविक काज छी

बाँकी चलि रहल अछि विद्यापति संगीत
संगीत ओइ मे विद्यापतिक कतेक
आ गबैया जी कोना विद्यापति पर भारी पड़ैत
अइ प्रश्न केँ उठायब उद्दंडता हैत
कारण, लोक केँ लगैत छनि सालो साल अंधकारकालक बाद
आइ विद्यापतिकाल आएल अछि

विद्यापति संगीतक कैक घराना आ लोकविधा मे तँ अनगनती
मुदा ताहि सँ नहि, विद्यापति अपन गोत्र–मूल सँ पकड़ल जेता
गबैया जीक उत्साह एतबा बढ़त जे आगू ओ जयदेव केँ उठौता

कविता मे आबि रहल अछि नीक नीक शब्द
चुट्टा ल' ल' क' पकड़ल

ओइ सँ शुद्ध मिथिलाक झाँस अबैत छै

ओइ मे गामक सभ्यता अबै छै, कुलीन पुरखा लोकनि बहुत हूबा सँ
कएल जाइ छथि स्मृत
ओइ मे तते डबडब आलोड़न
जे गौर सँ सुनू तँ वेदमंत्रक सुगंधि वातावरण मे पसरल सुँघायत

समय इतिहासक अपन सब सँ बेहया दौर सँ गुजरि रहल अछि
बहुत खतरनाक भ' गेल अछि एखन
भाषा मे मनुष्यक अन्त:करणक सुरक्षा
लेकिन अपना भाषा मे तकर कोनो सुगबुगी नहि सुनाएत
लौंग-इलायची छी ई भाषा जकरा भोजनोत्तर चिबौता कुलीन लोकनि

अपना समयक संग विश्वासघात क' सकैए भाषा
एकरो उदाहरण सब काल्हि फेर मैथिलिये मे पाओल जेतै।

संशय मे छथि कविगण

संशय मे छथि जे बाती कोन जराउ
सनातन पुरान मनोभूत केँ देखलनि
साक्षात मूर्त रूप लैत
तँ भेलनि अछि बोध— ठीक कहै छल,
संशयवादिये सब ठीक कहै छल

आब स्वयं संशय मे छथि

सत पूछी तँ
संशय के ई कोनो बात भेलै नै
अरे, बाती तँ जराउ ओ, जै सँ इजोत हुअय
ई नै जे घनघोर अन्हरियाक नाम राखि दियौ इजोत
आ कहियौ, लैह भ' गेलह इजोत

आ ने तँ कहू कोन बातक शंका?
कथीक संशय?

दिक्कत मे दिक्कत एतबे
जे ई बात संशयवादीक चलायल छियै
कोना गछि लेल जाय!

पदे मोताबिक कर्तव्य बनै छै
कवि छिया तँ द्रष्टो हेता कि ने यौ
भारतीय संस्कृति मे द्रष्टाक बड़ भारी स्थान
से ओ छिया कवि
जँ कवि छिया तखन संशय कथीक, दुविधा कथीक?

आसकतीक लेखें गंगा बड़ी दूर

हँ हँ, सत मे बड़ी दूर
गंगा तँ असल मे जिनगी
असल मे तँ ओ गामक लोक सँ,
किनार बसि जीबा-मरबा बला सँ,
गंगा तँ असल मे एक टा संस्कृति
बरतल जाएत तँ रहत नै तँ बिलाएत।
गंगा सँ अहाँक कोनो समागमे नै तँ
रहत ओ किएक?

अहाँ केँ असल मे बतेबाक चाही
कतेक लोकक शिरा मे अहाँ
गंगा केँ बहा सकलहुँ,
अहाँ तँ उनटा कहि रहल छी
अहाँ कहि रहल छी जे कतबा हजार करोड़ टाका
एहि पाछू खर्च भेलै
अहाँ मृत्युमुख नदीक सामने

ओकर उपहास क' रहल छी
धुकधुक धड़कैत जेना मनुखक साहचर्य
ओही लेल प्राण व्याकुल
की अहाँ एकरा केवल एक नदी कहबै?

नै नै, अहूँ तँ एकरा माय कहैत छी
गंगा हमर माता
नै तात, नै
अहाँ अपन मरती माय संग
मजाक क' रहल छी!

काल महाकाल

ओ लोक जे उछलि उछलि क' लगबैत छला जयकारा
कत्तहु सँ निश्चिन्त नहि छला
जे कमीशनक पाइ जे भेटतनि मेठ केँ
तकर बँटबारा मे बैमानी नहियें हैत

ओ आदमी जे ध्वज पर लिखाओल
जय जय के झंडी
द्वारि द्वारि पर जा क' खोंसि रहल छला बलजुमरी
नहि कहि सकै छला विश्वासपूर्वक
जे एहि सब कथूक किछु संबंध ओकरो संग छै

ओ फकीर जे मारि देल गेल बीच चौराहा
मात्र अइ दुआरे जे बात बेबात मे
निर्गुण केँ पुकारय
आ नकारय नफरत केँ,
क्यो नहि कहि सकै छला धरमा-धरमी
जे ओहि बेचाराक मुँह
अध्यक्षक पित्ती सँ एनमेन नहि मिलैत रहै

सब छला व्यस्त अति व्यस्त
मुदा किनको नहि भरोस पक्का
जे एना क' क' हुनकर बाल-बच्चा
भाभंस केँ प्राप्त करतनि

एक टा काल बीतै छल काल्पनिक
जाहि मे जकर वादा कएल जाइत छल निहित
तकरे टा लेल क्यो नहि छला निस्तुकी

घटि रहल छल पृथ्वीक औरदा
गर्भजल सँ पानि घटि रहल छल
वायु सँ शीतलता, बसात सँ नमी
मनुखक आँखि मे मनुखताक कमी

काल बीतै छल महाकाल
मुदा ककरो चेत नहि
सुवर्णपुष्पिता पृथ्वी बसबा जोग होइ लेल होथि शर्मिन्दा
ताहि मे आब नहि कोनो देरी
ककरो नहि होश
जे आगू कते कमे दिन मे जूमत सर्वस्वान्त!

ओइ गलीक आखिरी मुँहठान पर

कविता हमरा ओइ गलीक आखिरी मुँहठान पर भेटल रहय
जतय सकाले सँ बुक्क फाड़ि
कनैत रहै एक टा बच्चा
जकर नोर सूखि क' दाग जकाँ चिमटल रहै
आ जकर हिचुकी
रस्ते रस्ता पार करैत
महाबलीक स्वर्ग सँ जा जा क' धकामुकी करैक

कविता मे बच्चाक कलपब
कोनो सभ्यताक चकनाचूर हेबाक थिक लक्षण

आ नोरक दाग बनब
अकलबेरा मे
धरम के बेभरम होयब,
मुदा बच्चा केँ किच्छु नै पता!

कविता मे बच्चाक होयब
सहृदय सामाजिक केँ सब दिन सँ पसिन्न
मुदा बच्चाक कलपब
अही दिन मे आबि क' बनल छल
नीक दिन हेबाक निशानी

बलात्कारक बाद माय
बिसरत अपन दाग
तँ सोहराएत बच्चाक मुँहेठ
मुदा बच्चा कलपैतो रहत
तँ आखिर कते दिन?
कते दिन भेटैत रहत कविता
हमरा अहिना ओइ गलीक आखिरी मुँहठान पर?

न्यायकर्ता

जे राम बिपति पड़ला पर कहियो गीधो केँ कहलनि दादा
हनुमान तही राम लेल जिनगी कुरबान केलनि
मुदा
जे राम उन्नति एला पर
धिया सिया केँ देलनि वनबास
उचित बजला पर से
हनुमानो केँ मुकर्रर केलनि देसनिकाला।

कपट करबाक लेल जे लोक
राम केँ बनाबथि पतक्खा

तिनका सँ की करब न्यायक भरोस तात,
ताकि सकी तँ लोकक धर्रोहि दिस ताकू
जे रामायतनक चित्र मे
हनुमान केँ केलनि उपस्थित
कल जोरनहि सही
मुदा हनुमान बिन रामक गिरस्ती अधूरा,
कहियो जँ वनबासी लवकुश
उठौलक कोनो दिन कमान
रामक मुँहें बहरेलनि दौड़ू यौ हनुमान!

मर्म केँ जँ बूझी तात
तँ ईश्वर दिस नहि
लोक दिस ताकू,
हो-हो करैबलाक भीड़ सँ बाहर ओ सब
धरती लेल बीज एखन अजबारि रहल अछि
मरता शासक, सेठो मरता
मुदा देखबै लोक नहि मरत
न्यायकर्ता कतहु मरय?

बाना

राम देने छला सीता केँ वनबास
अइ मे ब्राह्मण वशिष्ठक डिक्टेशन रहय
मुदा तैयो
सड़लो भुन्ना तँ रोहु सँ दुन्ना
वशिष्ठ केँ हर हाल मे ऊपर राखय पड़त
अबानी-लबानी के बराबर मे तँ नहिये टा
राखल जा सकता ओ किन्नहु
कतबो किछु रहथु, बाना तँ जरूर रहनि

देखलो तँ जाइए पहिने बाने।

खगता

जाहि दिन मे
सैनिक मारल जाइत हो सिमान पर
आ खेत मे किसान,
इंसानियत के
कतहु कोनो नेतृत्व नहि
ने गाम मे बचल हो भाथीक सुसकारी
ने शहर मे सब्र,
पहाड़ पर शान्ति नहि
ने जंगल मे हरियरी,
जाहि दिन मे काजुलक हाथ मे काज नहि
ने बबुआनक न्यायालय मे तराजुक पलड़ा

जाहि दिन मे
अवध-नरेशेक पाग खसितनि लाजेँ
मुदा जाहि दिन मे
लाजो केँ लाज नहि

जाहि दिन मे
युवा मे हिम्मत नहि
ने युनिवर्सिटी मे सीट,
जाहि दिन मे हरिश्चन्द्रो के हरिश्चन्द्री पार,
जहाँ तहाँ बचल एकाकी भगजोगनी
अन्हार मे भुकभुक करैत

हदियायब नहि हे आगन्तुक कवि
गबैत रहब तखनहुँ आस-भरोसक गीत
एहनो दिन मे चाहब शान्ति, माँगब स्वतंत्रता
लिखब प्रेमक कविता
बन्हन झरकाबै लेल चेताएब आगि
जकर सब सँ बेसी खगता एहने दिन मे।

सब क्यो सँ किछु ने किछु छुटिये जाइ छै

सुन्न वीरान इलाका मे रेल
इंजिन फेल भ' गेला पर

दूर क्षितिज धरि निहारैत छी
कत्तहु नहि अछि एको टा मनुक्ख
ने एक्को टा देबाल
ने कारखानाक चिमनी
कत्तहु सँ नै उठि रहल अछि धुआँ, ने रुदन
से—
ई विशाल क्षेत्र ककरा राज मे पड़ै छै?

गाड़ी सँ उतरि क' देखलहुँ
ने जानि कोन कोन चिड़ै, जनम जनम के मीत लगैत
कोन कोन लता-गुल्म
एह, कते सोझ सोझ गाछ!
हम मोन पाड़य लगलहुँ
एहन हरियर कचोर वनस्पति-राज
की हम अपना जनम मे कतहु देखनहुँ छी?

गर्व सँ माथ उठौने
नान्हि नान्हि दूभि
हमरा देखलक आ खिलखिला देलक

कि तखनहि कोनो चिड़ै बाजल चीं चीं
ओह, दिल के बाग बाग हैब की एकरे कहै छै!

एक झंखार मे पैसि
हम बहुत रास फूल तोड़ि अनलहुँ
जानि ने कोन कोन फूल
एकर सभक गाँथब एक माला
आ अपन कोठली मे राखल ग्लोब केँ पहिरा देबै

सुकुमारि स्पर्शातुर हवा
लटपटा गेली हमर अंग-अंग सँ
रोमांचित हम
श्वास-रन्ध्र सँ होइत
फेफड़ाक गह-गह धरि
समा लेलहुँ कुमारि हवा,
ने जानि कते कते नश्वरता केँ
पिटपिटा देलिऐ

पृथ्वी हमरा लेल कतबा टाक छथि?
एहि कुमारि हवा केँ समा क'
जतेक फुला सकै छी हम अपन फेफड़ा!

बगल द' क' बहि रहल अछि एक तन्वंगी नदी
अहा, केहन सुडौल छरहर बेमत्त मन्दाक्रान्ता!
कालिदास रहितथि तँ फेर लिखल जाइत
वेत्रवती-आख्यान

हम गाड़ी मे घुरि अयलहुँ

अपन अपन बोगी मे बन्न लोक
अपस्याँत अछि, फिरिसान
कखन इंजिन औतै, कखन

कखन लोक पहुँचत अपन अपन कबुरगाह?
जुलुम भेल, जुलुम
अइ जंगल मे लाबि क' धोखा देलक रेलवे
आफद अछि, आफद
कखन धरि रहय पड़त वीरान मे, कखन धरि?

अपन अपन समस्याक अभियुक्त
कैद अछि सब टा मोसाफिर अपन अपन बोगी मे!

बाहर
सुन्न वीरान अइ इलाकाक निवासीगण
हँसि रहल छथि
बिलहि रहल छथि आशीष।

छूटब

हमरा बहुत दुख अछि
जे हम अहाँक साँचा पर सही नहि उतरि सकलहुँ

एखन धरि हम देरीदा केँ पढ़लहुँ नहि
फूकोक कोनो एक टा सिद्धान्त धरि हमरा नै मोन
लज्जित छी बहुत
नहि पढ़ि पौलहुँ एखनो धरि बेलीकोव्स्की, होर्खीमेर
अडोर्नो आ कि इतालो केल्विनो के
कोन्हु एक्को टा किताब
और तँ और
नामवर सिंह सँ एक मुलकातो धरि नहि क' सकलहुँ

ठीके बहुत दुख अछि
ने ठीक सँ बुझै छी सबाल्टर्न
ने एक कसगर भाषण द' पबै छी

पोस्ट माडर्निज्म पर
ओह, बहुत बहुत दुख अछि

मुदा भाइ, हम करितहुँ तँ की करितहुँ
कहिया जान छोड़लक हमरा हमर गाम?
चमोकन जकाँ चिमटल रहल धरती हमर आत्माक संग
हम तँ करबो कएलहुँ नेहोरा कैक बेर
छोड़ै लेल भेल नहि कहियो तैयार
ने हमर माय, ने धानक सोना कटोरा खेत

छूटि जाइ छै भाइ
सब क्यो सँ किछु ने किछु
छुटिये जाइ छै

की अहीं बता सकब
मौसमक पहिल बुन्न जखन खसैत छै धरती पर
की तापमान होइ छै ओइ घड़ी किसानक मोन के?
की अहाँ हमरा टोलक ओइ हरबाह के कथा बता सकब
जे पचास बर्ख सँ जोति रहल अछि
भारतीय गणराज्य स्थित जमीन
लेकिन जकरा लेल झोपड़ी भरि जमीन
अइ महान देश बुतें पार नै लागल

की अहाँ जनै छी
जटाजटिन खेलाइत हमर बहीन सब, काकी सब
किए खसबै छथि बेंग केँ उक्खड़ि मे
आ सामा चकेबाक गीत सँ
कोन दरद केँ पुकारै जाइ छथि बारंबार?

और तँ और
अहाँ तँ साइत ईहो बता नहि सकब
जे हरेक सुखाड़ के बाद की भनभनाइ छथि बूढ़ा बटवृक्ष

आ हरेक बाढ़ि के बाद नदी किए पछताइत अछि

आ ने तँ
ओइ पोस्टग्रेजुएटे के नाम बता दी अहाँ
जे भारतमाता चौक पर पान दोकान चलबैए
आ ने तँ ओइ युवतियेक गाथा
जकर भलमानुस भाइ ओकरा वेश्यालय मे बेचि आएल छल

कहलहुँ ने
छूटि जाइ छै
सब क्यो सँ किछु ने किछु
छुटिये जाइ छै!

छोटकू

पृथ्वी पर जीवन गाछ-वृक्ष विना असंभव अछि
छोटकू अपन पाठ्यपुस्तक मे पढ़लनि

पंडितक कहल-लिखल हर बात पर शक करक चाही
किछु दिन पहिनेक बात थिक
हम छोटकू केँ समझौने रहियनि

कोना नै समझाबितियनि भाइ
कोमल मति बाल-गोपाल केँ कहथि पंडित—
मुँह सँ बहरेला ब्राह्मण, पयर सँ शूद्र
लोकतंत्र 'लोक' लेल तंत्र छी
जीवन केँ जीवन्त बनौलनि वैज्ञानिक लोकनि
हमरा सब केँ अपन देश पर गर्व अछि
अरे रे, ककरा अछि गर्व?
आबय तँ सामने!
कोना ने समझाबितियनि?

छोटकू पढ़लनि
असंभव अछि गाछ-वृक्ष विना पृथ्वी पर जीवन
छोटकू बुझलनि
शक करक चाहि पंडित-वाणी पर
से छोटकू अहू बात पर शक केलनि।
'गाछ-वृक्ष'क जगह 'मनुष्य' हेबाक चाही
मनुष्यक विना पृथ्वी पर जीवन असंभव अछि
केहन रहतै ई कहब?
—छोटकू हमर विचार चाहलनि

केहन रहतै
से तँ भेल बादक बात
पहिने ई तँ बताउ छोटकू
'गाछ-वृक्ष'क बिना किएक नहि
मनुष्येक बिना किएक?

दुधिया धानक नवान्न चूरा जकाँ
अपन धारोष्ण चिन्तन केँ चिबबैत
गंभीर विचारकक मुद्रा मे बजला छोटकू
मनुष्ये नहि रहय तँ गाछ-वृक्षक लाभे की?
के ओकर शोभा देखतै?
के खाएत ओकर फल, सूँघत फूल?
गाछ काटि-काटि ओकर फरनीचर के बनबाओत?
ककर काज एतै ओकर बनाओल ऑक्सीजन?
मनुष्ये जँ नहि रहय गुरुजी, तँ के करत खोज
जे गाछ-वृक्षो मे जीवन होइत छै?

वाह छोटे गुरुजी, वाह
की धाँसू डॉयलाग मारलहुँ तानि क', वाह वाह!
मुदा, यैह ने कहय चाहै छी
मनुष्येक लेल होइत छै जाबन्तो गाछ-वृक्ष?

जी हँ, यैह बात
ठीकम ठीक यैह बात!

चलू मानलहुँ
गाछ-वृक्ष तँ जनमल मनुष्यक लेल, ठीक छै
मुदा, कनी ई तँ बताउ छोटेलाल
मनुष्य जनमल ककरा लेल?
नेताक लेल, कि समय समय पर दैत रहय वोट?
बनियाँक लेल, कि ओकर सामान बिकय ताबड़तोड़?
टीवी बलाक लेल, कि नित दिन ओकर टीआरपी बढ़ाबय?
वैज्ञानिक के प्रयोग लेल? कि हत्यारा के गिनती बढ़बै खातिर?
कि देवता आ धर्माधीश समक्ष हाथ जोड़ि, माथ झुका
ठाढ़ हेबाक लेल?
आखिर मनुष्य जनमल ककरा लेल?

क्यो ककरो लेल जनमितो अछि कि सही मे?
अपन हक के कनी देर छोड़ू, धरतीक हक मे सोचू!

अहाँ जे जनमल छी छोटू
समझि-बूझि क' नियार-भास क' क' तँ जनमल छी नहि
मुदा, की बता सकब
ककरा लेल जनमल छी?

खिलखिला उठला दुधिया धानक नवान्न चूरा
पितृभक्ति देखायब शुरू केलनि औपचारिकता संग
हेंहें, हम तँ अपन पापाक बेटू छी
अपन पापाक लेल जनमल छी

आब अहीं कहू भाइसाहेब
छोटकूक अइ बात पर
हमहू जँ नहि खिलखिलाबी
तँ की करी?

मृत्यु-क्रम

सब सँ पहिने मरत गाछ-बिरीछ
तखन मौसम मरि जाएत

मरत जखन बसात
तँ फेफड़ा भरि साँस तक नसीब हैत नहि

अइ सँ पहिने कि
मरि जाय सब टाक सब टा पंछी,
विचार मरि जाएत

फसिल मरत
फूल मरत
बचि कतय पाओत
नदी आ कि बरसा?

आर तखन
मरत प्रकाश—
एतेक एतेक धुआँ पसरत

केहन दुस्सह होएत ओ अन्हार
आ कतेक एकाकी होयब अहाँ!

हे हमर निष्कलुष अनागत!
घबरा घबरा क'
डेरा डेरा क' अपन बीमार आँखि सँ
चीरय चाहब जखन अहाँ अंधकार
ओह
कतेक हताश हैब
कि एक टा भगजोगनी तक नजरि नै आएत!

स्वाहा

पहिने जरैए आसमान
तखन धरती जरैए
सब सँ अंत मे जरैए मनुख

मुदा, चीत्कार करैए
सब सँ पहिने मनूखे
—हौ बा, बड़ रौद
—हौ बा, बड़ गरमी

आसमान बचि जाइए
बचि जाइए धरती सेहो कहुना
मरैए के? तँ मनुख

मनुख केँ जरबैए जे सुरूज
से आसमानो केँ जरबैए, धरतियो केँ
मुदा, अइ मनुख केँ देखियौ
जकरा जरबैए सुरूज
तकरा मनुख सेहो जरबैए
देखू चारू दिस चिमनी
कि नष्ट कएल जंगले देखू

अइ पर तँ आब
कि तँ करू छगुन्ता
कि तँ कहियौ
मनुखदैत्याय स्वाहा।

चिड़ै चुनमुन उगबैए रौद

अनंत अजस्त्र ऊर्जा तहिना हमर काया मे नुकाओल
जेना नान्हि टाक बीज मे विशाल बटवृक्ष,

मुदा, से खाली कहबाक बात

सुटकल रहै छी बिछाउन पर
बड़ी बड़ी भोर धरि
ओम्हर, बहार मे चिड़ै-चुनमुन करैत रहैए किलोल
मचौने रहैए अट्टाबज्जर
माथ धुनैए, देह पटकैए
जानि नै कते कते मोर्चा जीतैए
आ अन्तत:
उगाइये अनैत अछि रौद

अन्हरझोलीक अइ कालखंड मे
अन्हारक विरुद्ध निर्णायक अइ युद्ध मे
कते जरूरी अछि रौद हमरा खातिर
सब क्यो जनिते छी

मुदा, हम अपने रहै छी सुटकल बिछाउन मे
आ, चिड़ै-चुनमुन उगबैए रौद।

लॉकडाउन मे गाम

ओइ दिन हम अपन पुरान परिचित कैमरामैन केँ फोन केलिऐ
ओ फोटोग्राफीक अद्‌भुत पारखी आ तै लेल प्रशंसितो युवके अवस्था मे
अपन कारबार कयने झमटगर, कैक टा स्टाफ खटैत
वीडियो फोटोग्राफीक सट्टा सब मे

ओइ दिन फोन केलिऐ जे हौ, जुटानी तँ नै छै नमहर
तखन हँ, यादगारी रहय तकर, आबह ओइ दिन क' दैह
कहय लगला—आहि सर, अहाँ केँ नै बूझल, हम छोड़ि देल ओ काज
हम आब पटनो छोड़ि देल
जखन काजे नै तँ की पटना, की दिल्ली ?

आब तँ चारि मास भ' गेल
गामे मे खेतीखोला मे लागल रहै छी
परिवारो केँ किछु बेसिये सुविधा बूझि पड़ै छै
आ, हम तँ चकित रहै छी सर
ई छल हमर गाम, हमरे सँ अपन स्वरूप नुकेने!

गमला मे धानक फसिल

वर्चुअल लाइव पर सुनै छी गबैया जीक गायन
अवाज बड़ साफ
चेहरो मोहरा खूब जगजगार
तान भरैत कल्पान्त दिस
आ उठा क' तकरा फेकैत नि:शब्द मे
नस जे तनैत छनि ललाट पर
कते साफ देखाइत अछि एक एक रेघा
एते ढंग सँ तँ देखियो नै होइतय
जं हम एक्चुअल श्रोता बनल देखितहुँ

पलंग पर छी ओंगठल
हाथ मे अछि चाहक कप
घर मे छी आ घर पूरे सल्तनत मे अछि
मोबाइल पर देखैत सुनि रहल छी आलाप

ई दिन, कोरोनाक दिन नै होइतय
तँ प्रेक्षागृह मे देखितहुँ प्रोग्राम
बैसि क' देखितहुँ मूड़ी झुलबैत, वाह वाह करैत
सौ दू सौ लोकक वाह वाह एक लय मे उतरितय
तँ ओहो बनैत एक खास बंदिस
जे गबैया जीक नस नस केँ पुलकित करितियनि
सौ दू सौ लोक मिलि क' बनैत रसिक समाज
ओइ समाजक एक समाँग हमहू बनितहुँ

हम सब तँ अहिना करैत देखल सांस्कृतिक आयोजन
सामाजिक सामूहिक सार्वजनिक उपस्थितिक संग जीवन

हमरा लोकनि तँ देखल जे
किछु चीज एकान्ती मे कएल जा सकैए
किछु सामाजिक उपस्थितिये मे
ऊर्जाक संचार दुनू दिस सँ होइ छै
जे आदाता छी सैह गृहीता सेहो छी संगहि
तें ओ सार्वजनिके हो

गबैया जी केँ सुनै छी आनंदित
भरि मोन बिलहै छथि राग
लेकिन, इमान सँ कही
ओइ माहौल लेल छुछुआइए मोन
जे समाज सँ मिलि बनैत जीवन्त
होइए धानक फसिल भला गमला मे कोना तैयार हेतै!

स्थगित नै करबै सपन

भरल जुआनी मे गछित केलहुँ नोकरी
जकरा कि बहुतो दिन चलबाक छलै
एतबा जे तकर बाद सीनियर सीटिजन कहबितहुँ

स्थगित कएल जीवनक जानि नै कते कते नियार भास
हमरा तँ गाम गाम घुमबाक रहय
नगर नगर के पयबाक छल स्पर्श
हमरा ओइ तमाम जगह पर दू बेर तीन बेर एबा जेबाक रहय
जकरा हम अपन साँस मे भरने रही बसात जकाँ
जकरा कहियो देखल नै

हमरा तँ बाट मे भेटल ओइ समस्त लोक केँ बनेबाक छल अपेक्षित

जकरा देखने लागल
जे वाह, एकरा कही जीवन!

हमरा तँ एक शहर मे जँ क्यो बनितथि मित्र
आ जँ ओ कदाचित दोसर शहरक होइतथि
तँ हमरो जेबाक छल लगले ओइ नबका शहर
जे हमरा मित्र सन लोक केँ निर्मित केलक
हमरा तँ जे लताम लागल स्वादिष्ट
ओकर बाग देखबाक लेल जेबाक छल
जे गीत लागल मार्मिक ओइ गीतक जन्मस्थान धाँगबाक छल

बुढ़ारीक चिन्ता हम किए करितहुँ
किए करितहुँ लाथ जे शरीर अथबल भेल
शिथिल भेल नेत्रज्योति, बिसराह भेल दिमाग
जे भेल से भेल
मुदा किए हम करितहुँ स्थगित अपन सपन केँ अपनहि जीवन रहितहि

रिटायर हेबाक दिन आएल अछि तँ कोरोना युग सेहो आएल अछि
स्थगित अछि देश-काल
नास्टेलजिक करैत रहल जे रेलगाड़ी
जकरा संग जानि नहि कते कते जीवन प्रसंग जुड़ल
हमरे नै, सौंसे देशक
से रेलगाड़ी आब बंद क' देल गेल अछि
गली गली मे सक्रिय छै प्रचारतंत्र
नाश बड़ी जल्दी भ' जाउक तकर समर्थक
मोहल्ला मोहल्ला मे पाओल जा रहल छै

रच्छ एतबे जे प्राण हमर नै करैए हनछिन हनछिन
जे हम करबै तही मे संग पूरत ओहो, दैए बारंबार भरोस
नै नै, स्थगित हम नै करबै अपन सपन
स्थगित कयने आओर असोथकित हेतै जीवन।

घास लग रहै छै
जेना हरियरीक महा महावृत्तान्त

पृथ्वी-सूक्त

वायुमंडल छल जतय धरि
ओतय ओतय धरि ठाढ़ क' लै गेला चिमनी
केहन होइत ओ दृश्य
ओतय ओतय धरि ठाढ़ क' लीतथि देबाल
जतय जतय धरि अहाँ पसरल छी पृथ्वी!

मुदा, नहि
कोना ठाढ़ क' लीतथि देबाल?
आगू तँ समुद्र छथि
आगू तँ छथि बर्फ लदल चोटी सब

अपना जनैत खूब खूब कोसिस केलहुँ
खूब खूब बचबय चाहलहुँ जीवन पृथ्वी!
उत्कट अभीप्सा रखैत अहाँ चाहलहुँ सृजन
हरेक खात्माक करैत अख्यास
रचलहुँ अहाँ विकल्प

खुद अपने हम मनुख छी
तेँ ई नै हो जे उनटे अहीं केँ करी आरोपित
अहाँक जिन्दाबाद रहल पृथ्वी
हरेक बेकसूर मुलहाक रहय जिन्दाबाद।

हमरा समयक खूबी

बालक लोकनि बजार पर कविता लिखि रहल छथि

उचित बात!
जे जतय रहत
तत्तहि के लिखत कविता
जेना हम
गामक कहानी सब लिखैत रहै छी

बालक लोकनि चाहै छथि—
लोक बजारक खिलाफ ठाढ़ होथि
मुदा, बजारेक बीच ठाढ़ भ' क'।
बालक लोकनि छोड़ि नहि सकै छथि बजार
गाम जा क' भविष्य हुनकर असुरक्षित छनि

कबीर हुअय चाहै छथि बालक लोकनि
होहकारियो दैत रहै छथि सदरिकाल--
—जो घर जारे आपना, जो घर जारे...
मुदा हमरा समयक ई खूबी देखियौ
कबीर के हाथ मे लुकाठी नै छनि, मोबाइल छनि

मोबाइल के खिलाफ लिखै छथि कविता बालक लोकनि
मुदा, मोबाइले द्वारा मँगै छथि प्रकाशकक आशीष
आ ने तँ फेसबुक पर चेंपै छथि।

मैथिली साहित्य मे हमर जगह

जहिया सँ आँखि खोललनि युवा कवि साहित्य मे
हमरे नामक सुनैत रहला अनघोल निगेटिव कि पॉजीटिव
कै गोटे तँ खुल्लमखुल्ला कहनि

यैह थिका मैथिलीक प्रतिनिधि स्वर

बहुत बाद मे चलि क' भेलनि मालूम
जे हम ब्राह्मण नै छियै ने मानकतावादी
बाभनक गाम मे राड़ बनल अछि पजियार

मैथिली मे सब सँ पैघ वाद
वाचिक खिधान्सवाद
विद्यापतियेक जबाना सँ से सृजनात्मक साहित्य पर भारी पड़ैत
दिनोदिन से वृद्धिये पाबैत गेल
जेना स्वर्ण बढ़बैत रहल अपन मोल
युवा कवि जखन दीक्षित भ' सब किछु बुझलनि
यैह हुनका लेल बनल सब सँ पैघ राहतक बात
जे चलू, हिनका कम सँ कम पुरस्कार तँ
नहियें ने भेटलनि अछि!

नै जँ लीतथि तँ अनितथि कतय सँ
अत: हमरा कविता सँ लेलनि ओ आइडिया आ शिल्प
आलोचना सँ तथ्य आ तर्क
कथा सँ समाज देखबाक नजरिया
लघुकथा सँ बेधक कहबाक लूरि
शब्द सँ दुनिया गढ़बाक कला संस्मरण सँ लेलनि

लेलनि, मुदा गछलनि नै जे कतय सँ लेलनि
मैथिली मे विद्यापति छोड़ि क' ककरो नाम नै लेल जाइछ
बूड़ि नहि छला ओ मध्यकालीन कवि सब
जे अंत मे गांथि देल करथि 'भनहि विद्यापति'
मुदा, स्व-शब्दवाच्यता दोष सँ दूषित बतौता
जँ काव्यशास्त्री लोकनि केँ पुछियनु,
युवा कवि नाम नै ककरो लेलनि
दोष सँ मुक्त भेल मैथिली कविता
आधुनिक काल मे उत्तरोत्तर विकास पबैत गेल

चौबगली पबैत छी हम अपन बात
अलग अलग भाषा-शिल्प मे लिखल
विभोर भेल रहै छी
कृतार्थ लगैत अछि जीवन
जे जइ भाषा मे काज केलहुँ
तकर स्फूर्ति आ उन्मेष केँ कने बढ़ा सकलहुँ

आगू कत्तहु किछु बचल नै रहतै
ने ई सब लोक, ने ई सब वस्तु, ई सब तमाशा
आगू ककरो नामक लेबैया नै क्यो रहतै
बचतै की, तँ भाषा
आ ओइ भाषाक रत्ती भरि तागति बनि क'
हम अपनहु रहब विद्यमान,
कोनो एक अदना मनुक्खक लेल
सोचियौ, ई भेलै कत भारी बात!

अजान

अजान पढ़ि रहल छथि मौलवी साहेब
जेना कोनो तिलस्मी बाँसुरी बाजि रहल हुअय
धैवत धुन मे
धोइत पखारैत सौंसे संसारक कोहराम केँ

शब्द सँ बहराइ छथि अल्लाह
आ, उठैत उठैत नि:शब्द धरि ठेका देल जाइ छथि
मूर्त सन करुणा एगो
ओइ आलाप मे गुँथाएल छै,
बीच बीच मे जखन लैत छथि विराम
मुखर सँ मुखरतर मौन
बाउग भ' जाइत अछि अंतरिक्ष मे
अंतरिक्षक निच्चाँ मे ठाढ़ हम उबडुब करैत शाश्वत मे

निरभ्र प्रतीक्षा आतुर—
कखन मौलवी साहेब अगिला पद कहथिन

अइ अनभुआर ठेकान पर ठहरल छी संयोगात
की पता, शेष चारि बेरका नमाज लेल अजान के दैत हेथिन
ई बेचारे तँ उदित होइ छथि नित्त अही बेर
रातुक आखिरी अजान काल मे
आ कि सब बेर यैह दैत होथि
हमही नहि सुनि पबैत होइ कोहराम मे
जे अइ दिनक सब सँ बड़का सत्य बनल अछि, की पता!

जानि नहि, अइ बेचारे मौलवी साहेब केँ
की कहि क' पुकारैत हेतनि हुनकर समाज
मुअज्जम हुजूर तँ नहियें कहैत हेतनि
नै जानि आर्थिक सखापात कोन तरहें मदतगार होइत हेतनि
आ कि नै होइत हेतनि?
कहि नै असंतुष्ट तँ नै कदाच रहैत हेता
जँ रहैत हेता असंतुष्ट तँ मनुष्यताक लेल ई कते महाअनर्थ बात!
बुद्धक करुणा जाहि व्यक्तिक अवाज मे प्रत्यक्ष
ओह, ओकरा तँ राजा हेबाक चाही
मुदा, नहि जानि ...

पच्चासो टा प्रश्न मोन मे उचरैए
एक ओइ आदमीक लेल
जकरा कि कहियो हम देखनो नै छी
चिन्है परजन्त नै छी
बस एतबे मे एतबे जे
ओ ओम्हर पढ़ै छथि अजान
आ एम्हर हम सुनैत छी उबडुब उन्मेष मे

जा धरि खतम नै भ' जाइए अजान
कत्तहु दोसर दिस नै जाएत चित्त ने कान
ओह, क्यो हमरा मौलवी साहेबक संग कहियो बैसाबितय!

करुना

करुण रस एक टा होइ छै
ओकरा हम सब ड्रामा मे कोनो
कानै खीजै बला सीन मे देखने छियै,
शब्दो मे व्यक्त करैत रहला अछि कवि लोकनि कारनीक दुख
जेना सीताक दुख भवभूति
ओकरा करुण रसक महाकाव्य कहल जाइ छै

लेकिन
अइ अजान मे जे व्यक्त भ' रहल छै, से की छी
ओकरा कि हम कहि सकबै करुणा?
ओइ ठाँ तँ दुख के कोनो बात नै छै
ओइ ठाँ तँ छै प्रार्थना लेल पुकार
ओइ ठाँ तँ छै बस एतबे
जे छथि से बस एक परमात्मा छथि
ओतय तँ छै केवल स्मृति
आजुक आ सुदूर अतीतक

मुदा ओकरा सुनि क' हमरा किए लागैए
जे ओइ सँ झरि रहल छै करुणा!

नै नै ई करुना छी, करुणा नै
सभ्यताक अइ दानवाकार युग मे
जखन कि हम सब चलैत चलैत कोरोना तक पहुँचि गेल छी
तैयो बहुत कठिन बनल छै भावपूर्ण होयब
सुनब ओ बात जे दिल सँ निकलि रहल अछि
कते कठिन छै
तथापि बनल रहब मनुक्ख!

दिल के भाव केँ अजान सँ नै कोनो मतलब
मतलब बस एतबे जे संगीत ल' क' अपन

ओ हमरा ओइ भाव मे पहुँचा दैए

करुणा तँ कनी भारी स्पेलिंग भेलै
बालक लोकनि सीखथु पहिने करुना।

करैत जँ रहलह हमरा प्रेम

रस्ता चलैत चलैत एत्ते दूर एलहुँ
आबो कोना कहि सकै छियह जोगी,
जे नहियें देबह तोरा कोनो दुख

भरि समाँग निमाहलहुँ
जतबा धरि भेल चद्दरिये भरि पसारलहुँ पयर,
जतबा धरि भेल नहि झुकबेलियह तोहर माथ
ने सुनबेलियह गारि कि उपराग,
मुदा जोगी, कोना कहि सकै छियह
जे हमरा दुआरे आगू नहियें हेतह कोनो बेतिक्रम ?

कोनो दिन बेटा बाजत बेहूसल
जा जा अपन देह छीपब कि तोरा सिर जा लगतह
कोनो दिन पुतहु हेती अगिनबान
जा जा हम ताप सहब कि तोरा जा झरकेतह,
कोनो दिन हमरे धरत उकासी
कि तोरा ट्यूबरक्लोसिस सनेस पहुँचेबह

रस्ता चलैत चलैत एत्ते दूर एलहुँ
जोगी, कोना कहि सकै छियह
करैत जँ रहलह हमरा तों प्रेम
तँ कहियो घायल नहियें हेबह!

आँखि मुनबाक लेल

सुख के बहुतो संस्मरण अछि हमरा लग
बहुतो, बहूतो

जेना चिड़ै केँ रहै छै बहुतो बहुत संगीत
नदी केँ जेना बहुतो रास प्रवाह
घास लग रहै छै जेना हरियरीक महा महावृत्तान्त,
हमरा लग बहुत संस्मरण अछि
जे चिड़ै जकाँ गाबि सकलहुँ
बहि सकलहुँ नदी जकाँ
चतरि सकलहुँ भरि भरि छांक घास जकाँ
जे कतेको जिबाजन्त के ग'ह धरि पैसलहुँ

अहाँ करैत रहू हिसाब सुबेदार मेजर झा
कि कै किता मोकदमा जीतब रहि गेल शेष
कोन कोन डीह किनबाक शेष रहल सेहन्ता
दियाद मे किनका रसातल पहुँचाएब एखनहु बचल अकृत
अहूँ चाही तँ हिसाब कइये लिय' बाबू रामसोगारथ मरर
हमरा अइ सब सँ नै रहल कोनो मतलब
हमरा लग तँ अपने बहुत रास अछि सुखक संस्मरण
आँखि मुनबाक लेल।

पृथ्वी-राग

सौरमंडल मे छलि एक टा पृथ्वी जतय जीवन छलै
कहथि वैज्ञानिक लोकनि जे दोसरो दोसर ग्रहक मनुख
भेस बदलि क' पृथ्वी पर उतरय
पाबय तते ऊष्मा, तते राग

बहुत उमर भ' गेल रहै पृथ्वीक
तँ आगूक औरदा कम छल

ज्ञानी लोकनिक आँखि
अइ सँ नम छल,
ओ लोकनि आर कइये की सकै छला
पृथ्वी छल नेता सभक कब्जा मे
जाहि ढहुरी केँ मनुखतो धरिक पहचान नै
ने ज्ञानक लेल आदर
ने जीवनक लेल राग,
परमात्मा हेता तँ अचरज करैत हेता जरूर
सैह, एहनो लोक रहल अइ लोक मे
जकरा लेल जीवन मने अपने टा जीवन
सुख माने अपने टा सुख
दुख माने अपने टा पार्टीक हारब

मरि रहल छलि पृथ्वी नहुँ नहुँ
मारि रहल छला नेता लोकनि
कुहरि रहल छल विदीर्ण हृदय
मुदा मनुखक भवितव्य देखियौ
नेतेक कब्जा मे छलि पृथ्वी
आ मनुख होइतो
लोक जीबि रहल छल नेतेक हजूरी मे

अइ बात पर आब
होथि तँ कप्पार पीटथि परमात्मा
जे नेताक पैदाइश होइ छल अधिकतर वोट सँ
आ वोट दियय के, तँ मनुख!

धराशायी हेबाक समय
(कोरोना-ग्रस्त कविक कविता-डायरी)

कोरोनाक पहिल दिन
(24 सितंबर)

एक

पहिने तँ ई भरोसे करब महाग मश्किल
जे हमर रिपोर्ट पॉजीटिव आएल अछि

कोनो गंभीर लक्षण नहि जेना कि सर्वप्रचारित—
जी के स्वाद चलि जाएत, नाकक गंधचेतना
ऑक्सीमीटर पर देखबै तँ ऑक्सीजन निच्चाँ भेटत
बोखार रहत सौक करीब, कंठ धयने रहत कफादि

एहि मे सँ किच्छु नहि अछि हमरा पर लागू
हम तँ बस परसू खन भोरका टहलान सँ धरफरा क' घुरलहुँ
अचानक कनहाक मेघ छोड़य लागल छल बुमकारा
भागि क' एलहुँ ढुकलहुँ अपन रूम जतय पंखा चलैत रहै
घामे पसीनें रही नहाओल, आ एम्हर पंखाक ठंढी
एक्सपोजर कही कि सरद गरम, मामला तँ से छै

कहलनि हीत अपेक्षित सब—बीमारी ई बड़ चलल छै
किए करब लेट, एकरो जाँच कराइये लिय'
बड़ बेस, करा लै छी

आब रिपोर्ट आएल अछि पॉजीटिव
फोन क' क' कए स्वस्तिकामना करै जाइत छथि हीत अपेक्षित

दू
सार्वजनिक जीवन मे छी तँ जाइए पड़त दस दुआर
मिलैए पड़त हिनका सँ हुनका सँ
बेगरतूत आ वीआईपी सँ
किनका सँ करबनि हम लाथ, आ किए करबनि
जा देह अछि आ सार्वजनिक जीवन गछित अछि
किए करब कर्तव्य मे कटौती

सावधानी तँ जते प्रचारित छै, से रखनहि रही
ओहो बेचारे सब रखनहि हेता जिनका सँ पटल
तखन तँ की कहल जाय!
समझ सँ बाहर रहलनि पुरखा लोकनि केँ
तँ स्मरण एलनि भगवती शीतला

एते विकास केलक एतबा दिन मे विज्ञान
ई बुझितो जे विज्ञान केँ नोकर बना क' खटबैत रहल धनपशु सब
चलन मोताबिक कहैए पड़त जे एते भारी विकास केलक!
मुदा, की विकास केलक?
एखनो तँ नचार नागरिक बजाइये रहलाहें घड़ीघंट
नचार अपन क्षुद्रताक टोपें कि नचारीक, से अलग बात

बड़ बेस, से कोरोना माइ हमरो घर एली
हुलसि क' करै छियनि स्वागत।

तीन
राति मे नवीन के फोन आएल
बड़ी काल रहलहुँ अथ-उत मे
ओकरा सँ गपसप निंदारस-प्रधान
ताहि मे मलाल बड़ी जोर जे मैथिल होइ छथि धरकट

नै जनै छथि गुणग्राहकता
अनेक अनेक गप आ से बड़ी बड़ी काल धरि
छीह कटैत रहै छी एहन मित्र लोकनि सँ

आब एकर इहो अर्थ नहि जे मैथिल नहियें होथि धरकट
ओ हजार चीज भ' सकै छथि, तकर तथ्यो अपन बहुत हैत
मुदा तकर चर्चा मे हम करी अपन शक्ति जियान
बेकूफी छोड़ि एकरा की कहल जेतै?

मोनो छल उदास उदास
बड़ी काल तय रहल जे नै उठेबै
मुदा उठा लेल एक झटका सँ

आदमी सदिखन वैह नै क' सकैए जे तय अछि
आखिर तें तँ अछि आदमी!

आधा घंटा गप भेल अनिंदित, से नीक लागल
ज्ञान आ विचार-परंपराक गप भेल, से आरो नीक
कहलनि, आब हम बदलि रहल छी
हमहू कहलियनि बहुत बहुत बधाइ, शुभकामना समेत

पुछबो केला जे अवाज बदलल छौ, किछु होइ छौ की
कहलियनि वैह बात सरद-गरम बला
कहलनि, कोनो नै, तोहर तँ पुरान ढाठी छौ ई
एक दू दिन मे ठीक भ' जेबें।

चारि

तते आदंक छै कोरोनाक
लोक मरि तँ जाइए होइतहि
प्राण छुटै छै कनी दिन लगा क'
छुटबा सँ रहि जँ कदाचित गेल
तँ होइ छै, पुनर्जन्म छी ई हमर

मन के हारने हारि छै अधिक काल
अधिक काल यैह छै जे जे डरल से मरल

बहुतो रास स्मृति सब अछि हमरा लग
पुरखाक पुण्य थिक
पिताक स्मृति हिम्मत सँ भरि दैए
बताह हाथीक सूड़ सँ बहरा क' पिता फानि गेल रहथि पोखरि मे
बचि रचि क' जनमौने रहथि हमरा समान पुत्र

कोसीक स्मृति हमरा नस नस मे उत्फाल मचबैत
जीवन मे दुखी रहब दुइये घड़ी सोभै छै
तेसर घड़ी उठि क' होबहि पड़ै छै ठाढ़
दुख केँ पछाड़ि घेरबाक संघर्ष तेसरे घड़ी
क' देबहि पड़ै छै शुरू

किछु स्मृति हमरा अपनो कमाएल अछि
ओइ ठाम चढ़ान छै केवल
वक्त जँ ठेललक तँ खसलहुँ जरूर
मुदा जत्तहि रुकलहुँ ततय सँ फेर चढ़ाने रहै केवल

आब कोरोना अछि
देखबाक अछि ठेलि क' कते निच्चाँ खसबैए
कत्तहु तँ रुकबै
आ जँ नहियें रुकलहुँ
तँ कबीर छथिहे हमरा स्मृति मे
जतय मृत्यु थिक एक टा निच्छाह उत्सव
सुभद्र बाबू कहै छला मिथिलेक छला कबीर
अप्पन होयबा सँ तौलै छी
कते सही कहै छला सुभद्र बाबू!

पाँच
छाबा टटा रहल अछि
देह मे अछि बहुत दर्द

आब आराम करब
मोन केँ कहबै
निरर्थक थिक टटैनी
व्यर्थ थिक दर्द।

कोरोनाक दोसर दिन

(25 सितंबर)

एक

नेट पर करैत सर्च
देखलहुँ जे बाद मे डब्लूएचओ
अहू लक्षण सब केँ देलक मान्यता जै सँ कि हम एखन पीड़ित छी

सौंसे दुनिया बरगाही हिलि गेल अछि
आ तै मे सब सँ महा बथाएल साबित भेल अछि डब्लूएचओ
कते भारी लगै छै सुनबा मे विश्व स्वास्थ्य संगठन
तेहने उम्मेद सेहो बनै छी
समस्त प्रकारक उम्मेद के धराशायी हेबाक समय छी ई
सब बीकल अछि, क्यो नहि बचल अछि निखंड
संस्था सन व्यक्ति हो कि स्वयं संस्थे
क्यो नहि बचल अछि आइ
मनुष्यक संग मानवक अन्त:करण आ ओकर जीवनरागक संग

कोरोना सँ हो कि ओहुनो
हमरा ताधरि नहि मरबाक चाही
जा हम एहि समय केँ बदलैत नहि देखि लै छी।

दू

भोर मे अशोक जी केलनि फोन तँ फेर वैह गपसप
कोना आएल रही टहलि क' तँ मारलक एक्सपोजर

एक मोन भेल जे कहै छियनि, परम छथि ई
मुदा नहि
हम मरय चाहै छी कोनो दिन झटका सँ
अजूबा लागनि सब केँ जे अरे, केहन तँ रहय, ई कोना मरि गेल
जते लोक हमरा चिन्हैत हेता मिथिलावासी
सब के दिमाग तरह तरह के प्रवाद सँ गंदा भेल
ओ हमर अभ्युन्नति पर डाह करैत ततबे नहि
ओकरा वास्तविक मानबो मे हुनका ऐतराज
जेहन ओ हमरा देखै छथि
चौबीसो घंटा संशय रहै छनि सवार
नै नै, एकरा कम नै बुझियौ, छुपा रुस्तम छी ई
कर्ण कोना बर्दाश्त करैत हेता शल्य केँ
हम असकर सौंसे मिथिला समाज केँ बर्दाश्त करै छी
जो रे भाग्यशाली मिथिला समाज

तेँ हमरा जँ बस मे रहल तँ सुनय यैह चाहै छी
अरे अरे, ई कोना मरि गेल!

तीन

अरे अरे, ई कोना मरि गेल
ई तँ अही नगर मे रहै छल
जतय रहय ततय के जयजयकार केने रहै छल
कहियो ओकरा मुरझाएल नै क्यो देखने हैत
अही बाटें जाइ छल
तेराहा पर खाइ छल पान
पानबलाक संग हो हो क' क' हँसै छल

दूरे दूरे रहलै सब ओकरा सँ
ओकर गप सबहि केँ खौंत बारने रहलै
मुदा जे क्यो कहियो निकट गेल स्वार्थवश
सब केँ सम्हारलक ओ
ओकरा लग सँ खाली हौसला भेल अहाँ

नै ककरो घुरैत देखने हेबै

बड़े बड़े ठीका सुबेदार सब केँ
लागले रहलनि सेहन्ता जे
ओकरा कहियो दुर्गत भेल देखतथि पसारने हाथ, करैत खेखनी
ठीक ओतबे टा चद्दरि छलै ओकर झकझक, दपदप
जतबा टाक विधाता देने रहथिन देह,
असल मे देह सँ तँ ओ छलहे नहि
ओ तँ अपन विचार सँ छल, अपन चरैवेति सँ
ओ कोना मरि गेल!

चारि

मास्क लगा क' बितेलहुँ अछि समुच्चा कोरोना-काल
बाहर सँ जखन घर घुमलहुँ
सोझे बाथरूम ढुकलहुँ अछि
कपड़ा-बस्तर सब ओही ठाम उतारैत
नहाइत साबुन मलि मलि क'
जतेक जे संग लागल आएल हो वायरसक जीवांश
सब टा केँ अपना जनैत निखत्तर पहुँचाइये क' भेलहुँ घरबारी

मुदा, किछु कयने किच्छु होइबला नहि
कोरोना कमजोर लोकक तलास मे रहैए
कमजोर भेला के तँ जिनका छनि सरोकार
आर ओ, जिनका मे होइन संवेदना

संवेदनशील होयबा मे इम्युनिटीक होइत छै क्षति
जानि नहि, कोनो मेडिकल रिपोर्ट एखन धरि
अइ निष्कर्ष पर पहुँचल अछि कि नहि!

पाँच

माथ दुखाइए
बड़ी जोर दुखाइए माथ

आँखि बन्न क' क' पड़ल छी
देखि रहल छी अपन श्वास-प्रश्वास

कम बात नै छै
अइ घोर मथदुक्खी मे देखि पाबि रहल छी
अपन श्वास-प्रश्वास

कोरोनाक तेसर दिन

(26 सितंबर)

एक

जहिया सँ आँखि खुलल
अपना घर मे यैह परिपाटी देखैत आएल छी
जहिना कि कोनो रोग बलाय आएल परिवार मे
माय धूमनक धूप घरे घर, गलिये गली घुमाओल करथि
पर्वत्योहार कोनो आएल तँ यैह धूमन देवता केँ समर्पित होइ छल,
रोगो बलाय मे तँ सत कहू तँ देवते केँ

माय सँ चार्ज लेलनि पत्नी, जे कि आरो उत्साही देव-कर्म मे
ई तँ अनदिनो धूप लगबैत धूमनक
धुआँ धुआँ क' देथि सगर घरेलू वायुमंडल केँ
देखने छी हम, कैक बेर बरजलकनि अछि डाक्टर बेटा
बात केँ बुझियौ माँ, धुआँ चाहे कथूक हुअय
नै होइ छै फेफड़ाक लेल ठीक
माँ पर मुदा कोनो असर नहि

आइ देखल धुआँक पौरुष, आइ देखल
साँझ खन जे भरने रही फेफड़ा मे भरिपोख
राति होइत होइत सौंसे कंठ केँ गछाड़लक
मुँह सँ बोल नै बहराइ
धयने कंठ तेना जे साँस एबा जेबा मे पराभव

टेम्परेचर से बढ़ि गेल
आँखि मे से जलन
नाक दुनू से बेराबेरी बन्न
भरि राति अबैत रहल कँपकँपी
निन्न मे देखी बाबन इंची बहत्तर इंचीक सीनाबला दैत्य
जकर हाथ हमर कंठ मोकने जा रहल अछि

भोरे उठल छी तँ देह करैए फकफक
ऑक्सीजन लेबल नै घटल अछि, सैह बुझै छी रच्छ

खतरा मे पड़ल लोक केँ एको क्षणक लेल
तर्क-विवेक नहि छोड़बाक चाही
नै देता काज चारि हाथ बला देव कि आठ हाथ बाली देवी
जेना कि एखने
हमरा नै देलनि अछि काज

दू

ओइ दिन देवपूजन कुमार चर्च केने छला गुड़ीच के लाभक
पुछलियनि—छै कतहु?
कहय लगला, रामदेव के बढ़ियाँ होइ छै
ओना तँ अपन आफिसोक गाछ पर मारिते रास छै
कथीक गाछ पर छै हौ? नीम पर छै?
नै, सहजन पर छै आ आम पर
कहलियनि, आमबला पठा सकी तँ सब सँ बड़का गिफ्ट हैत
घंटा भरिक भीतर एक बंडल यों मोटका मोटका गुड़ीच
हमरा डेरा पर हाजिर छल
जे अपन दिव्य दरसन सँ महिषी गाम केँ मातु दै छल

रातिखन पुछला जयप्रकाश, काढ़ा मे मुसली आ अश्वगंधा दै छियै?
नै दै छलियै, कहलियनि—लेकिन, दालचीनी दै छियै
एखन देखै छी जे दुनू वस्तुक पुड़िया हमरा घर हाजिर

छोट छोट सहकर्मी थिका ई सब
शुभकामनाक पोस्टर ह्वाट्सएप पर क' देथु पोस्ट तै सँ नै मानै छथि संतोष
छोट छोट छिया कि ने!

सैह, पैघ बनबा लेल कते जरूरी चीज सब केँ छोड़य पड़ै छै!

तीन
छओ मास पहिनहि सँ बन्न करबा देने छी घरक टीवी
जनै छी जे हमरा बन्न कयने अइ अभागल देसक किछु बिगड़ै बला नै छै
मुदा, एक बंदा हम अपन परिवारक चारि प्राणी केँ राखि सकब स्वस्थ
ई कि कोनो छोट देस सेवा छी

छोट हुअय कि पैघ
साधन एक्के टा बचै छल फेसबुक
ओही सँ जानी देस समाजक हाल, ओही पर संवाद
ओही पर अपन बनाओल दुनिया मे
थोड़बा काल घुमि फिरि आएल करी

देखू जे चंडलबा सब केँ सेहो पता लागि गेलै
भोरेभोर खोलू फेसबुक कि झुंडक झुंड नरवानर सब हाजिर
अपकर्मीक नाम लेब शास्त्रो मे निषिद्ध
तेँ नाम नै किनको लै छी मुदा ओ सब पत्रकार कहबै छथि
बड़े बड़े टीआरपीक राजा थिका ई सब
एकरे बदौलत अरबपति खरबपति पाँचे छह साल मे अपनहुँ
आ मालिकक तँ वर्णन की हम क' सकब!

नरवानरक जिम्मा की तँ जनमत केँ सम्हारने रखबाक छनि

दुनिया निघटि क' ओत्तहि आबि गेल अछि
जतय सत्तर के दशक मे हम अपन आँखि खोलने रही
बहुत प्रसन्न लगैत अछि मोन
फेसबुक सँ हटैत होइए जे हम अपन वास्तविक घर के बाशिन्दा भेल छी

चारि
दर्द मे सब सँ खराब बात की होइ छै,
छटपटाइत भयावह देहदर्द सँ
हम अख्यास करय चाहै छी

होइ छै, कनियों टा जँ कम भ' जइतय दर्द, कनियों टा!

दर्द सँ भरल आदमी तैयो एक इमानदार आदमी होइत अछि
गछैत अछि जे दर्द सब टा समाप्त हैत नहि
जिनगी आ दर्द के जते रिश्ता छै सघन,
सुखक संग से भइयो कोना सकैत अछि,
कहू तँ ई विचार सोचबो मे अनचित लगैत अछि
जे दर्द के बराबरी कहियो सुख क' सकत

सब सँ उत्थर किछु देखल जँ अपन अइ जिनगी मे
गछै छी, ओ सुख रहय

पाँच
रामदेव के दबाइ बड़ बिकि रहलनि अछि
कतय केँ रखता ओ एते एते रुपैया?

जखन हुनकर उदय भेल रहनि
हमहूँ बहुत हियाब सँ सुनै छलहुँ हुनकर प्रयोग
हम तँ एक तरहें हुनकर प्रशंसक भ' गेल रही
मयंक मिसर केँ सिखौने रहियनि सातो खण्ड प्राणायाम
जकरा ओ बेचारे आइ धरि निमाहि रहला अछि

बहुत जल्दी रामदेव अपन असली बाना मे आबि उतरलाह
समय समय के बात छै
समैये आबि गेल छल असली बाना मे उतरबाक
भस्म मे नै मिलेबाक पशु-हड्डीक चूर्ण
ने मधु मे चिन्नी

मुँह मे भने जाबी लगा क' चलय
मुदा, हरेक आदमी केँ बाना मे अपन असलिये उतरबाक चाही
शिकारी तँ शिकारी, शिकार तँ शिकार
शिकार सब केँ बचबाको लूरि तखने हो तँ हो

हम मरि जाएब बेसी पसिन्न करब
बढ़ाएब नहि इम्युनिटी रामदेवक कोरोनिल पीबि क'।

कोरोनाक चारिम दिन

(27 सितंबर)

एक
मरब तँ हम किन्नहु नहि, से आत्माराम कहै छथि

कहै छथि जे फेर एक बेर रस्ता बदलिहह
जेना ओइ बेर बदलने रहह

ओइ बेर गाड़ी हमर भेल रहय दुर्घटनाग्रस्त
चकनाचूर भ' गेल रहै नबका माडेलक बोलेरो
लेकिन हम बचि गेल रही
आ बदलि देने रही रस्ता

कहै छथि, फेर बदलिहह रस्ता
प्रकृतिक सान्निध्य सँ रहिहह कुंडाबोर
पुबरिया बाट पकड़ि क' गाना गबैत चलि अबिहह
जकर धुन मे कोनो बाउल एक कान मूनि एक हाथ उठा कहै छै
बाट तँ बनाओल गेल छल आदमिये खातिर
मुदा चलय मुरहा तखन ने!

दू
की मनुख अपना लेल बाट ताकि सकैए?
बाट जे कि खास ओकरे लेल बनाओल गेल होइ!

नहि नहि, मनुख कोना ताकि सकत बाट
ओकरा तँ जखन देखेतै चारूभर बाटे बाट देखेतै
ओ कोना क' सकत चुनाव?

मनुख केँ ताकि लै छै ओकर बाटे
जेना सद्‌गुरु अपन शिष्य केँ ताकि लैत छथि।

तीन

आइ पधारला अछि बोखार महराज
हरबिरड़ो मचबैत, सबहक चिन्ताक ग्राफ बढ़बैत
निधोख पार क' गेला अछि सौ डिग्रीक सीमा

बड़ बेस
हिनका बिना कने उदासो छल कोरोना
बोखारे नै तँ कोविड की?

शुरू सँ मिला क' देखी तँ दू टा लक्षणक भेल अछि बढ़ोत्तरी
कंठ धयने, नाक बंद आ आब ई बोखार

जय हो
कोरोनाक सब संगी-साथी लोकनिक जय हो।

चारि

गंधचेतना समाप्त भ' गेल अछि, तकर अवगति बाथरूम मे भेल
निकलि क' सुघलहुँ परफ्यूम तँ कत्तहु कोनो गंध नहि छल
ने फिनाइल मे कोनो गंध बचल अछि ने पेट्रोल मे
नेनपन मे एकबेर सर्दी भेल रहय तँ ई चीज महसूस केने रही
से मोन पड़ल तँ ईहो मोन पड़ल जे पोद्दार जीक दोकान सँ
अनने रही नौसादर आ कथी कथी क' क' नाक मे सूँघी

राति होइत होइत स्वादचेतना सेहो विदा भेली
बेस्वाद लागय भोजन दू दिन सँ

मुदा आइ तँ समाप्त
राति मे बनबौने रही पनीर पकौड़ा, हमर फेवरिट
से जखन खाय लगलहुँ
की खाइ छी कोनो पता नहि
खिस्सा मोन पड़ि गेल एक टा बड़ पुरान
नव नव जखन बियाह भेल रहय
एक दिन सारि केने छली कलाकारी
रुइया के तरुआ खुऔलनि,
बड़ी काल धरि मुस्काइत रहलहुँ अइ खिस्सा पर

स्वाद लागय कि नै लागय, भोजन करबाक अछि पूरा
से प्रोटोकॉल छै, ठीक छै, सैह सही।

पाँच
बोखार अछि साढ़े सौ
ऑक्सीजन छियानबे
पल्सरेट सौ केँ पार करैत
दम नै फूलैत अछि
लंबा लंबा सांस लैत
जखन धरै छी श्वास पर ध्यान
ध्यान टिकि जाइए

ठीक छी हम।

कोरोनाक पाँचम दिन

(28 सितंबर)

एक
भोरेभोर मोन पड़लीह माय, बड़ मोन पड़लीह

जेना एखन बीमार पड़ल छी जे पन्द्रह दिन हिलब नहि
अहिना एक बेर बीमार पड़ल रही पचीस साल पहिने

चिकेन पाक्स भेल रहय, बड़ कष्टकारी
माइये सम्हारने रहथि हमरा
आँचर सँ सौंसे देह पोछब, जखन कि हम सूती केराक पात पर
तते बेसी लहर रहै सगरो देह मे
नीमक एक बोझ सिरमा मे राखल
तै सँ हौंकैत रहथि
दिन मे दू बेर क' बैसथि हमर पैताना
आ गीत गाबथि शीतलाक, मालतिक, भैरवक, बूढ़ी माइक

ओही साल हम किनने रही कनी ढंग के टेपरिकार्डर
माय के गाओल एक एक गीत हम ओहू हाल मे टेप केने रही
बाद मे ओकरा हम डिजिटल करबाओल
आइ पैघ-पैघ संपति जे सब अछि हमरा लग मे थोड़ किछु
ताहि मे प्रथम थिक ई डेढ़ घंटाक सीडी

माय मोन पड़ली तँ देखलियनि कर्पूर केँ
आइ यैह थिकी हमर माय
बहुत पैघ पैघ नियामत जे बख्शल खुदा हमरा
ताहि मे सँ सब सँ पैघ यैह हमर पत्नी थिकी

दू

मनुष्यक रिश्ता केँ जै तरहें तार-तार केलक अछि कोरोना
निश्चय जे नियंता लोकनि
ठीकम ठीक एही तरहक नव समाज बनबय चाहै हेता

भाइ केँ जँ पकड़लक कोरोना तँ ओकर सहोदरा छोड़ि पड़ायल
बाप भेला बीमार तँ बेटा फिरार भ' क' ससुरारि चलि गेल
मरियो जखन गेला बुढ़ा तँ अंत्येष्टि लेल आएल नहि बेटा,
समाज केलक क्रियाकर्म
कते के तँ लहास ल' जाय बला परिवारी नै क्यो रहलै
उपेक्षा सँ सीदित कतेको बाप नीक भेला पर घर नहि घुरल
ओम्हरे कोम्हरो चलि गेल

समयक समुद्र मे नान्हि टाक पतवारक भरोसें
जेना कहियो राहुल सांकृत्यायनक बाप फिरारी भेल रहथि

आइसोलेशन मे छी अपना घर मे तँ पूरा रखै छी सावधानी
सब केँ ट्रेनिंग देलियैए
मुदा, आहि रे बा,
पहिले दिन कनियाँ जिद ठानि देलनि
जे अही घर मे निच्चाँ मे हम सूति रहै छी
कड़ा हुअय पड़ल जे हम चलि जाएब अस्पताल
ओत्तहि जा क' भरती भ' जाएब, जीयब कि मरब ओत्तहि जा क'

सुतै तँ छथि अलग मुदा पल पल निगरानी खातिर
मरड़ाइत रहै छथि सगरो दिन, सगरो राति
बालक एक ने एक बेर चलिये एता
टुकटुक ताकैत रहता हमर मुँहेंठ
कनियाँ कहै छलि काल्हि असकर मे कानै छला

बिपति पड़ै छै तँ लोक केँ अपना पयर तरक जमीन
देखाब दै छै!

तीन
वरिष्ठ कवि कीर्तिनारायण मिश्र फोन केने छला
मोबाइल छल साइलेन्ट, पते नहि लागल

किए केने छल हेता? की प्रयोजन?
बात एक्केटा बुझाएल जे कीर्तिनारायण पुरस्कारक
अपना कोटाक जूरी नामित करबाक चाहैत होथि!

खिन्न भ' गेल मोन
बैमनमा सब पुरस्कार तय केने रहत पहिनहि सँ
आ एहन एहन नाम जूरी मे ल' लेत जे जस्टीफिकेशन भ' जाय
हमरा किए बनब' चाहता जूरी?

या तँ कोनो दलित केँ देबाक हेतनि पुरस्कार
या फेर सहरसा दिसका केकरो

अइ शैतानी धुरफन्दीक पेंच कनी कनी आब हमहूँ बुझय लागल छी
खास क' क' ओइ दिन सँ जहिया सुकान्त सोम के उद्दंडता देखने रही
गलत कहलनि विष्णुचंद्र शर्मा
नागार्जुनक अन्तर्विरोध सभक
पूँजीभूत रूप बालकक नाम ओ गलत कहलनि।

बाद मे जखन फेर आएल किर्ती बाबूक फोन
बात दोसर रहै
हुनका कोनो बांधवी लेल, राजकमलक रिसर्चर,
सुभाष चन्द्र यादवक मोनोग्राफ चाहियनि छल
कहलियनि, हँ भाइजी, हमरा लग अछि, कनी दिन मे पठा दै छी।

चारि

दिन मे दू बेर अबैत अछि कोनो अज्ञात इलेक्ट्रोनिक डिवाइस सँ कॉल
एक टा कलकत्ताक नंबर रहैत अछि एक टा गाजियाबादक
ओ जनैत अछि जे हमर कोविड-19 पॉजीटिव आएल अछि
ओ पाँच टा सवाल करैत अछि नित्त रोज
हँ तँ एक दबाउ, नै तँ दू दबाउ
बस पाँच टा सवाल, ने एक बेसी ने एक कम
हम किछु कही तकरा सुनबाक ओकरा कान नै छै
मुदा ई धरि कहैत अछि जरूर जे डाक्टर जल्दिये हमरा सँ गप करता
पाँच दिन बीतल, आइ धरि तँ कोनो डाक्टर नै फोन केने अछि
आँकड़ा जुटेबाक ई सरकारी तामझाम छै

ई अपना मुलुकक नबका स्वास्थ्य व्यवस्था छी।

पाँच

आइ पहिल बेर दरस देखौलनि अछि महाकाल
ऑक्सीजनक लेबल पनचानबे सँ निच्चाँ चलि आएल अछि
थरथरा रहल अछि ऑक्सीमीटरक स्क्रीन

फोन लगेलियनि पुष्यमित्र केँ
कठिन परिस्थिति मे ऑक्सीजनक व्यवस्था सोचि क' राखी

ओ पुछलनि सब टा लक्षण
कहय लगला कोनो मेडिकल रिपोर्टक बारे मे
जकर गंध आ स्वाद स्थगित, तकर डेथ के संभावना कम रहै छै
दिल्लीक कोनो डाक्टर अग्रवालक रिसर्च के संदर्भ देलनि
जे एहन डेथ एखन धरि नै भेल अछि

अपन सीनियर दीपक आनंद जी केँ हम नै कहलियनि
नै कहलियनि अपन प्रधान केँ ने मंत्री-आवास
आ पुष्यमित्र केँ कहलियनि, एक टा फ्रीलांसर पत्रकार केँ
एना किएक, के जानय
मन मानबाक बात छै सब!

छओ
राति मे अजित आजाद फोन केलनि
भैया, रघुनाथ मुखियाक किताब पर
अगिला रवि केँ लाइव चर्चा राखय चाहै छी
इच्छा अछि, एक वक्ता अहूँ होइयै

हालसालक दिन मे छपल दुइये टा कविता-पुस्तक हमरा बड़ उपयोगी
एक टा मोहन जीक 'ग्लोबल होइत गाम'
दोसर रघुनाथक 'झुझुआन होइत गाम'
दुनू मे गामे गाम, मुदा अलग अलग
कविक काव्यभाषा जँ ओकर अपन अपन नहि
ने ओकरा लग अपन यथार्थ, ने अपन तथ्य
की अर्थ अछि ओइ कविताक?

मुदा अजित केँ कहलियनि, नै अजित
रवि दिन तँ हमरा बुते संभव नै हेतह

के जानय, रवि दिन धरि हम अइ दुनिया मे रही कि नै रही
भ' सकैए, ओही दिन हमर अंत्येष्टि भ' रहल हुअय
भ' सकैए वेंटिलेटर पर होइ ओइ दिन अथवा वेंटिलेटर लेल क' रहल होइ संघर्ष
पटना एम्स के फुटपाथ पर लाबारिश मुरदा जकाँ तजैत होइ प्राण
एनमेन सरकारक उपसचिव पासवान जी जकाँ
हमहू तँ आखिर उपे छियनि एक,
के जानय कहलियनि नै एते, बस मोन मे भेल?

सात

सुतली राति मे छाती मे उठल अछि दर्द
लगैए सीबि रहल अछि कोनो अज्ञात दरजी तरेतर हमर करेज केँ
आह, सुइया अइ पार सँ ओइ पार
ओह, सुइया ओइ पार सँ अइ पार
लगैए चोंचा अपन खोंता केँ सीबि रहल अछि

श्वास पर ध्यान लगेबाक करै छी प्रयत्न
काशिराज तँ एना करैत एक बेर पेट के आपरेशन करबा लेने छला
चेत करू, मरबाक नै अछि आत्माराम
मरब तँ तहिया जहिया मृत्यु आएत
ई तँ मात्र दर्द थिक
एस्प्रिन लेबा लेल कहने रहथि पंकज
मरबाक नै अछि, एस्प्रिन लेबाक अछि।

आठ

पिताक मृत्यु हम देखने छियनि
कवितो लिखने छी हुनकर मृत्युबोध पर
से मोन पड़ल एखन
जखन लागैए जे नहि, आइ अइ सँ बचब कठिन अछि

ध्यान नै एकाग्र भ' पबैत अछि
माथ भारी अछि बहुत

सौंसे देह सँ चलैए पसेनाक पमारा
जे कि पारासेटामोल के करतब छी
टटाइए टाँग जे आब निष्क्रिय हैत

हे छाती, अपन तागत दियनु टाँग केँ
बिसरि जाउ जे ओ टाँग छी अहाँ छाती
नै करू विश्वास जे क्यो आदिपुरुषक मुँह सँ बहरेला
क्यो छाती सँ क्यो टाँग सँ
सब झूठ छी
सब बहरेला स्त्रीक योनि सँ

हे छाती, सम्हारू टाँग केँ
ओ सरियेता तँ अहाँ केँ सम्हारता

कोरोनाक छठम दिन

(29 सितंबर)

एक

मित्र डाक्टर अजित प्रधान जखन पुछय लगलाह स्वास्थ्य-समाचार
भारी पराभव मे हम पड़लहुँ, की हिनका कहियनि
आरटी पीसीआर सँ कन्फर्म भेलहुँ ?
डी-डाइमर टेस्ट करेलहुँ ? एचआरसीटी तँ नहिये करेने हैब ?
जी नै डाक्सैब, नहि करेने छी। हमरा तँ बुझलो नहि छल।
सीबीसी, सीआरपी,एलडीएच आ क्रिटनिन सेहो कराइये लेब
जी डाक्सैब, कोशिश करै छी, सब करा लेब।

अंशिका के मम्मी एनएमसीएच मे मेडीसिन के प्रोफेसर
पुछलियनि तँ कहली, जरूरी तँ छैहे
अइ सब सँ ई पता लागै छै जे कोविड भीतर कते डैमेज कएलक अछि

दुइये टा चीज एखन धरि बुझैत रहियै

कोरोना सँ या तँ लोक मरि जाइ छै या बचि जाइ छै
पीड़ित लोक झखैत रहै छै जीवन लेल
लेकिन मेडिकल बाजार मे पचासो हजारक टेस्ट अइ बातक छै
जे कोरोना अहाँ केँ कतबा दकड़ि क' थुकड़लक
जखन कि हमरा-अहाँक लेल यैह बड़ भारी बात भेलै जे बचि गेलहुँ।

दू

अपन घर मे छी कोरेन्टीन
मुदा जे क्यो असली मैथिल हेता
असंभव हेतनि घर मे रहि क' होयब कोरेन्टीन

कखनो पूजापाठ बाद चरणामृत देबय एती पत्नी
तँ कखनो आँचर सँ सौंसे देह गंगाजल सँ पोछती
पुत्र केँ जँ कहियनु ओम्हरे रहह, कननमुँह हेता
लगले आबि बैसि जेता निच्चाँ फर्श पर
पुछता—तखन कहियौ, कोना कोना की सब?
भातिज महराज तँ अपने लाख मे एक
एखनो धरि चेत नै जे हमरा सँ कनी दूरी रखबाक चाही

तीनू केँ पठाओल आइ स्वास्थ्य केन्द्र, करबाओल जाँच
दम मे दम आएल जे तीनू निगेटिव बहरेला
ओम्हर सँ पंकज के फरमान भेलनि—सब केँ कहियौ,
रोज दिन मे एक बेर चारि दिन आर्सनिक एल्बम लेतै
आ से हर महिना एक खोराक

तीन

ऋषि-मुनि लोकनि जेना होथि बीतल कोनो जुग मे
ई नहि जे ओ बीतले जुग मे भ' सकैत होथि, आइ नहि
ओ आइयो भ' सकैत छथि, छथि, आ किछु तँ छथि हमरो सँ संपर्कित

सदाशिव श्रोत्रिय थिका राजस्थानक, उदयपुर बसैत छथि
भेंट नहि हुनका सँ हमरा कहियो, मुदा संवाद बहुतो बेर
धन्न कही मोबाइल केँ जे कतेको जुग केँ
एक संग होयब संभव केलक

'युगों का यात्री' पढ़ि क' पहिल बेर फोन केने छला
पैघ रचना ककरा कही? जे अपन समानधर्मा चिन्तित सब सँ
एक्कहि संग एक पैघ मात्रा मे अहाँ केँ जोड़ि दियय
सैकड़ो फोन आएल, तकर खिस्सा कथी ले, दुश्मन के जी जरबै ले?
तकर वास्तव मे कोनो प्रयोजनो की?

श्रोत्रिय जी केँ सुनि क' लागल छल
अरे, ई तँ ठीकम ठीक ओहिना पढ़लनि अछि हमर किताब
जेना हम लिखने रही, एकदम्म सम पर
रोम-रोम पुलकित भ' गेल छल
जेना आकाश सँ बरिसल छल कोनो तर्कातीत आभा
कहने छला—हमरा तँ भरोस नै छल, अइ तरहें किताब लिखैबला लोक
अहू जबाना मे क्यो बचल हेतै!

हुनकर पढ़ाओल शिष्य लोकनि कैक टा हिंदीक प्रखर लेखक
हुनकर सभक लेख सँ, संस्मरण सँ पूरा बुझलहुँ हुनका मादे
जखन कि ओ भूलो सँ अपन कोनो कृत्यक चर्च नहि कएल करथि

से श्रोत्रिय जी तीन दिन सँ करै छला फोन
हम नहि उठाबियनि जे असौकर्य छल बजबा मे
यद्यपि कि हुनकर मिसकॉल देखि
एक तोर गंगास्नान रोजे भ' गेल करय

आइ फोन केलियनि
जेना कि सब बेर करथि पहिल प्रश्न, स्वस्थ छी ने अहाँ?
आब कहू, लाख तय केने रहू जे दुनिया केँ
अपन दुख मे शामिल नहि करब, पार लागत?
सब टा समाचार कहि देलियनि
लागल, जेना बुझले होइन हुनका
बजला—किछु नहि हैत अहाँ केँ
अहाँ सन लोक केँ किछु नहि भ' सकैए
एखन अहाँ केँ बहुत काज करबाक बाँकी अछि

अहाँ आराम करू, हम प्रार्थना करै छी अहाँ ले'
सब दिन करब, अहाँ आराम करू

चकित छी हम
एतबे बात कहबा ले ओ फोन केलनि की?
तीन दिन सँ एतबे बात कहबा लेल करै छला की?
के जानय, ई आत्मा अधीरा ककरा-ककरा संगें
कोना-कोना जुड़ल रहै छै!

चारि
मोना के आइ फोन आएल तँ भेल जे हँ
अही फोनक इंतजार हम करै छलहुँ पाँच दिन सँ

छओ मासक बेटा छै कोर मे, से छल बीमार
ओ बहुत परेशान छलि
पुछलियनि तँ कहलनि हँ, आब ठीक अछि बौआ

तखन चलय लगलनि हुनकर प्रश्न सभक पमारा
बताउ तँ एना किए? एते लोक विभाग मे, अहीं किए पॉजीटिव?
सभक भला चाहनिहार अहीं, केयर केनिहार अहीं
अहीं सब सँ काजुल, सब सँ पाबंद अहीं
सब सँ बेसी नियम धेने चलैबला अहीं, आ अहीं बीमार!

अहाँ केँ जँ किच्छु भेल
तँ भेटतनि की भगवान केँ
ताकनहु कोनो जवाब, कहू तँ!

पाँच
ऑक्सीजनक लेबेल देखै छी आर निच्चाँ आएल अछि
मुदा दम नै फुलैए एखनो
एखनो हम भरि भरि क' फुला लै छी फेफड़ा
एखनहु हम पृथ्वी ग्रहक दुलरुआ छी

कोरोनाक सातम दिन

(30 सितंबर)

एक

रातिये सँ बोखार नहि आबि रहल अछि
डि-डाइमर के तखन कोन प्रयोजन?
कहै छथि पंकज—शरीर मे जे डैमेज होइ छै तकर अधिकांश शरीर अपने
दुरुस्त क' लैए,
बशर्ते कि ठीक भोजन आ ठीक विश्राम भेटि रहल हो
से तँ जरूर भेटि रहल अछि
जाँच सभक गहमागहमी देखै छी तँ होइए आब बचि गेलहुँ
डैमेज आ दुरुस्तीकरण तँ थिक अन्ततः एक टा सतत प्रक्रिया
जे कि अंत मे जा क' मृत्यु मे विलीन हैत।

दू

गीत सब सुनलहुँ अछि अइ बीच मे बहुत बहुत खूब खूब
काल्हि तँ भरि दिन कबीरेक संग लागल रहलहुँ
सैह, अहू जुग मे कबीर केँ केहन सुंदर सुंदर शिष्य भेटलनि अछि
आबिदा परवीन पाकिस्तान वाली ताहि मे सर्वोपरि
दू दशक पहिने जखन प्रह्लाद सिंह टिपाणियाँ अपन आरंभ केने रहथि
तहिया पटना मे भेंट भेल रहय यूथ होस्टल मे
ताहू दिन मे हुनकर बीस टा सँ कम कैसेट हम की किनने हेबनि
शबनम बिरमानी प्रह्लाद जीक सिखाओल
ओ बेचारी कबीर ले अपन जीवन कुर्बान केने
आ से सब नै तँ कुमार गंधर्व केँ सुनैत रहू सुनैत रहू
नस नस मे फुदकैत रहता कबीर
भक्क लागि जाए तँ अचरज नै जे हम अपनहि कबीर छी

मुकेश केँ सुनलियनि एक पूरा दिन
तँ एक दिन सीनियर वर्मनदा एस डी केँ
कव्वाल सभक कव्वाली तँ बुझू चलिते रहल फरीद अयाज आदि-इत्यादि
आँखि मुनने पड़ल छी संगीतक चभच्चा मे

आइ भोर मे सुनैत रही भजन
अल्ला तेरो नाम
वैष्णव जन तो तेणे कहिये
सुनैत-सुनैत मोन पड़ला पंडित जसराज
तँ चलय लागल, रानी तेरो चिर जियो गोपाल
ई गीत हम तहिया पहिल बेर सुनने रही जहिया हमर माय मुइल रहथि
हजार दू हजार बेर सुनने होयब
हरेक बेर लागल जे अइ गीतक रानी थिकी
हमर माय आ गोपाल हम अपने थिकौं
डूबि क' सुनियौ, अहूँ केँ एहने लागत
अहाँ छी गोपाल, अहाँक माय थिकी रानी
जकर चिर जीवनक कामना छनि सूरक पद मे से अहीं छी

तीन

अस्वस्थ तँ सौंसे अछि मुलुक
लेकिन मौत के मुँह पर पहुँचल जँ क्यो रोगाह अछि
तँ से थिक स्वास्थ्य व्यवस्था

पड़ल छी बीमार तँ जाइये पड़त अस्पताल
अस्पताले जा क' मुइलाहें हमरा समयक कतेको आम खास लोक
हमर मित्र कैलाश झा किंकर खगड़िया अस्पताल मे मुइल छला
ओह, मोन पड़ैए हुनकर कष्ट
क्यो पुछनिहार नै रहनि
अरगड़ा मे बन्न क' क' जेना मुकर्रर कएल गेल होनि मौअति
हुनकर क्यो मित्र रहनि एक झोलाछाप
तकरा बिलखि बिलखि क' करथिन फोन
हौ, तोंय अपन दबाइ केनाहू भेजह हमरा लग
झोलाछाप केँ पुलिसक डर, पुलिसक ड्यूटी अरगड़ाक सुरक्षा
आ किंकर जी चीत्कार करैत मरि गेला

छाती मे भेल दर्द तँ काल्हि गेलहुँ अस्पताल
ओह हे प्रभु, जते लोक ओइठाँ बसै छथि

मनुख छथिहो की क्यो?
एक रत्ती जे छूने छलहुँ गेट, जे क्यो हैत भीतर तँ करबै जिगेसा
कोना धोपने रहें हिकारत सँ चंडलबा सब
जवाब जे देलियै, एकजुट भ' गेल सब टा जे आब हमरा पीटत

अस्पताल छी प्रभु के
प्रभु बसै छथि कारपोरेट के जेबी मे
जेबी केँ जेड प्लस सुरक्षा सदत बहाल
कतय पहुँचि पाओत ओकर लगीच धरि आम जन

आम जन केँ ठीके आब थोक भाव सँ मरि जेबाक चाही
अस्पताल निकालत विज्ञप्ति अमिताभ बच्चन के नदी-लग्घी के
तकरा ल' क' औंटने रहत सगरो दिन चैनलक नरवानर सब
आ आम जन अपन अपन घर मे अपन पाइ सँ कीनल टीवी पर
राति दिन एक क' क' नरवानरक टीआरपी बढ़ाओत
ओकरा कखनो चाही कंगना रनौत, कखनो सुशांत सिंह राजपूत
आम जन केँ आब ठीके थोक भाव सँ मरि जेबाक चाही।

चारि

फेफड़ाक सीटी स्कैन लिखलनि अछि डाक्टर
से करबय आएल छी अस्पताल
हौ भाइ, एक भोरक बहराएल छी घर सँ
देह मे जान नै अछि, फकफक करैत अछि परान
कनी जल्दी क' दैह
पॉजीटिव भेलहुँ तँ दूरि नहि गेलहुँ हौ, करह दया

नै नै, पहिने अहाँ पीपीई किट पहिरि क' आबू
से अहाँ केँ अपने आनय पड़त
एतय हजारन मरीज अबैए स्कैनिंग लेल, स्टाफ अबैए
सबहक जान लेबै की?
जाउ जाउ, किट पहिरि क' आबू ग'

संग मे छथि अनभुगार भातिज
लग मे दोकानो नै कोनो जतय किट भेटैत हो

चारि बजय जा रहल अछि, भोरे बहराएल रही दू टा बिस्कुट खा क'
भूख सँ लगैए छूटि जाएत प्राण
हौ जी, किट के जते पाइ होइ छह ल' लैह, क' दैह जोगाड़
जी नै, ई सब धंधा अइ ठाम नै होइ छै

कफन के इंतिजाम जेना मुरदा करैत हुअय खुद
पाँच बजे धरि जा क' अनलहुँ किट, करेलहुँ कहुना एचआरसीटी
रगड़ी हम कते, आइयो कयल प्रमाणित
करैए पड़लनि यार कें स्कैनिंग, मानैए पड़लनि हारि।

कोरोनाक आठम दिन

(1 अक्टूबर)

एक

बहुतो दिन बाद आइ घुरतीक बाट पकड़लनि अछि घ्राणशक्ति
प्रथम संकेत ओत्तहि भेटल मने बाथरूम मे
फिनाइल के गंध सेहो लागल जे कतहु दूर सँ आबि रहल अछि

गंध के कोनो एक देह छै जेना
जकर देखाइत अछि छाया
छाया, तूँ दरस देखा
बहुत दिन भेल परस्त्रीक दर्शन

दू

आइ फोन केलनि डा. अरुण पीएमसीएच सँ
ओ वीआईपी लोकनिक पर्सनल अधिकारी छथि
ओइ कोटि मे हमहू गनल गेलहुँ, से रोग जखन चलला तखन बूझल
कहलनि, सर हम तँ कैक दिन सँ करै छलहुँ, अहीं नै रिसीव करियै

लोक तँ ठीके हमहूँ नै कोनो मामूली
पैघ पैघ लोक, बड़का बड़का अधिकारी सभक संग

काज कयने छी, बाइ नेम-नेचर जनै छथि,
किताब जे हमर छपल 'युगों का यात्री' से महामान्य केँ बहुत पसंद
पचास टा सँ ऊपर किनबा चुकल हेता
गेस्ट लोकनि केँ देबा लेल उपहार,
जाहि बड़का सभक संगे रहलहुँ, सब हमर प्रशंसक
हमर की प्रशंसक, प्रशंसक हमर काज के
हमर अपन कोनो एजेन्डा नै
कोना नीक काज टाइम पर हैत तही पर एकाग्र
हमर की प्रशंसक?

मुदा हिस्सक हमर सुरुहे सँ खराब
अहाँ कोनो काज कहलहुँ, हम क' देलहुँ, बस
कहैयो लेल गेलहुँ नहि, दरबार तँ पैघ चीज छै
वीआईपीक संगत सँ की भेटबैया?
हमरा सिद्धान्तक मोताबिक बेगार-दर-बेगार

तकर फल बाबू यैह जे सब सूत्र रहितहु ककरो लग बजबाक उत्साह नै
हरदम एक टा अलमस्ती कप्पार पर सवार
कनियाँक मानी तँ हमरा पर भगवतियो दहीन, भाग्यो
कोरोने जँ भेल तँ भेल नै तेना जे कतय जाइ की करी, हे प्रभो!

मुदा, आइ डाक्टर अरुण केलनि फोन
कहलनि—कखनो, बारह बजे रातियो केँ बूझी खगता
तँ क' दी हमरा फोन,
पाँच मिनट मे अस्पतालक गाड़ी टीम समेत अहाँक दुआर पर रहत

बड़ बेस बड़ बेस तँ कहलियनि, से सब केँ कहै छियनि
मुदा अपनहु जनै छी, हुनका फोन करबाक नौबति नै कहियो आएत
हम आम जन जकाँ जीलहुँ सब दिन
आम जन जकाँ मरी से अछि काम्य

तीन

जहिया सँ देश मे कोरोना शुरू भेल
लगभग तहिये सँ शुरू भेल अछि लॉकडाउन
नोकरी या कि तँ छूटि गेलै
या फेर भेलै वर्क फ्रॉम होम
कम भारी बात नै रहै कि हमरा पर तकर नै कोनो असर पड़लै
सब दिन हमर काजे चलैत रहलै
ऑफिसक जँ नहियों, तँ अप्पन काज
मुदा बैठारी नै कोनो दिन

यैह चौदह दिन छी
जकरा हम बैठारी कहि सकै छियै
सुनै छी गीत, देखै छी फिल्म
कतेक जिनकर नाम सुनैत रहियनि
तिनकर कला देखलियनि
थोड़े किताब पढ़लहुँ जकरा बहुत दिन सँ पढ़य चाहैत रही

सही बात लेकिन कहब
भीतर जे महाप्रश्न छल पसरल
जे कि सगर व्यक्तित्व केँ दलमलित केने छल
ओही सँ छुटकारा के कोशिश छल ई सब तमाम
प्रश्न मुदा बेसी कठिन छल
ओहि सँ छुटकारा के कोनो बाट ताकनहु भेटबैया नहि

उदास भ' भ' क' सोची हम
आइ तँ हाथ हाथ मे मोबाइल
जाहि मे फोर जी सीम,
आइ तँ जतय चाहू ततय हवाइए जहाज सँ उड़ि जाउ
आइ तँ कोनो नै बीमारी लाइलाज
बशर्ते कि टाका हेबाक चाही भरखर

आइ तँ चारू दिस विकासे विकास
आइ तँ पहाड़ केँ उजाड़ि क' आकर्षक सभ्यता बनौने

जंगल केँ काटि क' पैघ पैघ नगर बसौने
आइ तँ की हिमाच्छादित मरुप्रदेश आ की महासगर के गर्भ
जै ठाम चाही विस्फोटक के फैक्ट्री खोलि ली

आइ तँ
यादगार तिथि केँ बच्चा जनमेबाक हबश पोसैत स्त्री
चारि चारि मास के जरब उठेबा लेल तैयार
किए तँ सुविधा उपलब्ध छै
बशर्ते टाका हो भरि गाँठ

एहन सुविधाजनक दुनिया मे फेर कोरोना किए?
समुच्चा संसार दलमलित किए एकरा सँ
ककरो नै फुरैत उपाय
पटपट लोक मरैत, से किए?

कोनो गोट तर्क भिड़ा पयबा मे जखन निरस्त होइत हेता पुरखा लोकनि
तँ कहैत हेथिन महामारीरूपेण संस्थिता
अज्ञेय शक्तिक क्रोध छी ई
ई सब साक्षात ईश्वर अपनहि करैत छथि अपनहि जनैत छथि
हमसब अपराधी छियनि, माँफिये टा माँगि सकै छी

हमरा लोकनि की केलहुँ विकास?
आइयो थारी आ घड़ीघंटे पिटैत छी
आइयो मानैत छी जे सार्वजनिक रूपें विनती केने उपद्रव हेतै शान्त

हमसब तँ आइयो
रूपेण संस्थिते के जगह पर छी
— हे ईश्वर, प्रकोप शान्त करियौ...

कते गलत छी हम सब?

हमसब हवा-बसात तक के दुर्गंजन क' देलिऐ
आरो की सब केने हेबै तकर अंदाज अही सँ पाबि लियौ

आइ जँ बंद अछि मनुखक हबगब
तँ सड़क पर जंगली जानवर आबि आबि जिरा रहल अछि,
उनचास पवन धेने अछि अपन अपन वास्तविक रूप प्रदूषण-पूर्व
कत्तहु एक तँ जाउ नहि, मुदा जँ जाउ तँ पाबू बदलल बदलल
समस्त सब किछु मौलिक मौलिक
किछु तँ एहन भेलै जे गलत होइ छल से सही भेल
उपद्रव घटलनि मनुक्खक
प्रकृति अपन मूल स्वरूप मे अयली

प्रकृति अपन मूल स्वरूप मे आबथि
तै लेल साइत जरूरी छै
जे जाबी बरदक मुँह पर नै, मनुक्खक मुँह पर बान्हल जाय

—मोन कने सुभितगर भेल अछि अपराह्न सँ
तँ कोरोनाक देखि रहल छी विराट रूप।

चारि
हमरा लोकनि प्लेग केँ देखल, हैजा केँ देखल
आब कोरोना केँ देखि रहल छी
प्लेग गेल, हैजा गेल
कहिया जाएत ई कोरोना?
कहिया ई जनपिट्टा प्राप्त करत अन्त?

— हरदी गुरदी बजता जहिया नेता लोकनि, मठोमाठ लोकनि
स्वीकार करता हारि
मानता जे सही मे मानव-प्रश्नक कोनो समाधान नै भेल
नै भेल विकास, जै सँ माता पृथ्वी भेल होथि विकसित

एखन तँ बड़ देरी छै
एखन तँ उनटा अछि
एखन तँ कोरोना थिक एक टा अवसर
सही-गलत जे चाही एखने करता
कते सुंदर बात थिक
भयभीत जनता एखन घर मे बंद अछि।

पाँच
गरमी जँ लागय बेसी
घामे पसीने क' दियय कुंडाबोर
तखनहु खोंखी चलि आओत

खोंखी चिन्हैत अछि अतिरेक
जेना कि आनो सब बीमारी चिन्हैए
ओकरा सरद-गरम सँ नै तते मतलब
जते अति सँ

छओ
कोरोना सँ कोना मरैत हेतै लोक?
जेना ओइ दिन ऑक्सीजन लेबल गेल छल निच्चाँ
हम कएल प्रयास, लगाओल जोर
जे सब करब लागल तर्कसंगत, केलहुँ
ओ निच्चाँ हम ऊपर
आ लेबल बढ़य लागल

जँ नै बढ़ल रहितय लेबल?
नै काज दितय जोर, ने तर्क, ने होश
तखन?
डाक्टर अरुण पठबितथि एंबुलेंस
ओ एंबुलेंस की क' सकितय?
ओ हमर मरण-स्थल टा बदलि सकैत रहय
शिवपुरी नहि, पीएमसीएच!

कोरोनाक नवम दिन
(2 अक्टूबर)

एक
स्वचालित फोन जखन आइ आएल तँ मोन घोर भ' गेल
एक मोन भेल द' दै छियै सब टा उनटा पुनटा जवाब

आ देखै छियै तकर बाद ई सब की करै जाइए!
मुदा नै, तुरत्ते भेल चेतना
किछु नहि करै जाएत ई डकूबा सब
कते लोक मुइल, कते कते केँ लहास लेल लेबैया नहि
कते के लहास पड़ल रहलै जीवित रोगी सभक बीच कैक कैक दिन
कते के अस्पतालक सड़क पर कुहरैत छुटलै प्राण
कते के तँ जाँच के नंबर तक नै एलै, चलाचली आबि गेल

ककर की बिगड़लै?
कोन बड़काक मुँह के मुस्की भेलै मलिन
जँ ओ अपनहुँ पॉजीटिव नै भ' गेल हुअय?

कते वीभत्स छै पूराक पूरा दृश्य
पहिने कहत हिंदीक लेल एक दबाउ, अंग्रेजीक लेल दू
की आइ अहाँ केँ खाँसी, खरास, कँपकँपी भेल अछि?
की आइ अहाँ केँ बोखार लागल अछि?
की आइ अहाँ केँ चारि टा सँ ऊपर दस्त भेल अछि?
की आइ अहाँ केँ साँस लेबा मे तकलीफ भेल अछि?
हँ के लेल एक दबाउ, नै के लेल दू
सब टा मे जँ अहाँ दबेलहुँ एक
तैपर कहत, अहाँक हालति आर बेसी खराब भेल अछि आइ
आइ हमर डाक्टर अहाँ सँ घर पर जा संपर्क करता

सुनबा मे अबैए, कोनो कोनो देस मे ठीके डाक्टर घर पर आबि जाइ छै
सूर्यनारायण जी छिया प्रोफेसर कतहु दच्छिन प्रान्त मे
भेलनि कोरोना तँ आबि धमकलनि डाक्टर
अपने बेचारे फेसबुक पर लिखने छला
तैपर ट्रोलर सब भीड़ल
जे बरू वामपंथी लोक छी तँ वामपंथी सरकार केलक मदति
लेकिन अइ ठाँ हमरा ओतय तँ नै कहियो आएल
हम कोन पंथी छी? जयपंथी?

बड़ जरूरी एक टा किताब निकललैए
उसने गांधी को क्यों मारा
लेखक अशोक कुमार पांडेय
गांधी जीक छियनि आइ जनमदिन हुनका गोड़ लगै छियनि
ओहि किताबक चलैत रहै वर्चुअल लोकार्पण समारोह
सुधीर चन्द्रा आ मृदुला मुखर्जी सन इतिहासकार बजैत रहथि
हम सुनबा मे रही मगन
आ ई मरदे बेर बेर ट्रिंग ट्रिंग
ने निपबा जोग ने पोतबा जोग मुदा ट्रिंग ट्रिंग
करैत रहल परेशान
मोन घोर भ' गेल।

कोरोनाक दसम दिन

(3 अक्टूबर)

एक

आइ छिऐक यूपीएससी के पीटी
पटना मे बहुतो ठाम भेल छै सेन्टर
तै मे हमरो ड्यूटी लागल अछि मैजिस्ट्रेसी लेल
जवाब देलकैए ऑफिस, ओ कोना ड्यूटी करता, पॉजीटिव छथि
तावत दोसर के लगाओल जाय ड्यूटी
ठीक भेला तँ आगू करबे करता, स्वत: निहित।

दू

भोर केँ रोज भ' जाइए खोंखी
कैक बेर तँ कंठ सँ कफ पर्यन्त बहराइए
ई कोनो एलर्जी छी साइत
जकर जड़ि रतुका कि भिनुसरबाक चर्या संग जुड़ल अछि

बोखार नै होइए तँ तकर मतलब हिरोपनी नहि थिक
कतबो गरमी लागय, देह मे टीशर्ट जरूर हेबाक चाही
— डाक्टर पंकज के राय छनि।

तीन
आइ प्रधान जी के फोन आएल
बहुत खुसफैल सँ केलनि गप
आधा घंटा सँ कम की केने हेता
एक एक बात पुछलनि
एक एक अनुभव सँ भरल देलनि हिदायत
कहलनि, मास दिन लागय कि दू मास
जा अहाँ पूरा ठीक नै भ' जाइ छी, आराम करू
पढ़ै लिखै बला लोक छी, लिखू पढ़ू
घर के सदस्य सब बचल रहथि तकर पूरा राखू जतन

कम बात नहि थिक
जीबि गेल छी कोरोनाक महा गछाड़ सँ, तँ आब
बड़का बड़का लोक केँ आबि रहल छियनि स्मरण।

चारि
एचआरसीटी के आएल अछि रिपोर्ट
कहैए हमर फेफड़ा सात बटे पचीस परसेन्ट डैमेज भेल अछि

कते भेलै सात बटे पचीस?
कम भेलै कि बेसी?
आ कि बहुत कम भेलै वा बहुत बेसी?

डाक्टर लोकनि कहै छथि—
नै नै, बहुत बेसी नै भेलै
खूब खाउ, खूब आराम करू
एतबा मरोमति शरीर अपनो क' लेत

हौ बूड़ि
पचीस बटे पचीस रहितय जँ
जकरा तों बहुत बेसी कहितह
तकरो जँ मरोमति क' सकितय तँ शरीरे करितय

नै तँ अंत होइत
अइ मे तों सब की करितह?
की क' सकलह अछि सगरो संसार मे?

कोरोनाक एगारहम दिन

(4 अक्टूबर)

एक

रोज भोर केँ कफ, रोज भोर केँ मथदुक्खी
रोज भोर केँ अनुभव जेना भोर मात्र कहबे टा लेल भेलैए

भरि दिन करैत रहू आराम
गरम गरम चीज सब पिबैत रहू
गार्गिल करू बेटाडिन सँ
दबाइ फाँकू

हौ जोगी, बचि तँ गेल बुझना जाइ छी
मुदा, गंजन तँ नहि कम भेल अछि जी।

दू

पाँच दिनक बाद, आइ आएल अछि
आरटी पीसीआर के पोख्ता रिपोर्ट

ई पाँच दिन कोरोनाक कते होइत अछि?
हजारो केस के बारे मे जानि चुकल अछि संसार
जाँच रिपोर्ट जहिया आएल ताहि सँ तीन दिन पहिने
कि दू दिन पहिने, एक दिन पहिने मरि चुकल छल रोगी
कतेक केस मे तँ जाँच रिपोर्ट ठीक ओइ काल आएल
जखन मुरदा जरैत रहय

प्रभु केँ की कहबनि?
ओ किछु कहबा जोगर छथिहो की?
कहबै तँ विज्ञान बाबू केँ कहि सकै छियनि
मुदा हुनको कहब बेकार
कारपोरेट के माँगपूर्ति के बाद हुनका होशे कहाँ
हमर-अहाँक शिकाइत सुनबाक?
ओइ बेचारे केँ तँ मुखियो-सरपंच सब सँ गारि फज्झति
रोजे सुनय पड़ैत छै, बचलाहा टास्क सभक एवज मे
आ जनमक गुलामी तँ एम्हर छैहे

कतय सँ चलल छल ई सभ्यता आ कतय पहुँचल?
एकर सिवाय नीक बात की कहि सकै छियै
जे हम जिन्दा बचि गेल छी
आ अपन हवाल कविता मे दर्ज क' रहल छी

कोरोनाक बारहम दिन

(5 अक्टूबर)

एक
काल्हि साँझे सँ देखै छलहुँ खेला बेला
गरमी लगला पर पंखा जँ कनियो तेज करी
कि सिहरै छल देह
ठीक तहिना जेना रोगाधिराज के आगमन भेल रहनि

भोरे उठि क' पाओल, गंधचेतना बिलाएल अछि
सूँघि सूँघि क' देखलियै एकहक टा गंध
जेना अक्सरहाँ हमर सोनू खरगोश सुंघने घुरैए
लेकिन, कत्तहु किच्छ नै

की कहबै एकरा, किछु थाह नै लागैए
की ई भ' रहल अछि?

विचारने रही जे चौदहम दिन टेस्ट करबय चाहब
भरोस रहय जे पक्का निकलत निगेटिव
आब ? आब हौ बाबू जोगीलाल ?

दू

डाक्टर अरुण, पीएमसीएच सँ गप भेल
पुछलियनि, ई कॉमन बात छै की ?
मने दोहरा क' लक्षण शुरू हैब ?
कहलनि, कॉमन तँ नै छै तखन संभव तँ खूब छै
असल मे तेहन रगड़ी रोग थिक कोरोना
जे निगेटिव रिपोर्ट एलाक बादो बचल रहै छै
आ बखत पड़िते अपन परताप देखा जाइत छै

अइ बात सँ कनी आश्वस्त ओ भेला जे हृदय संबंधी
कोनो दिक्कत रहल नै अछि हमरा पहिने सँ
मुदा तैयो इकोस्प्रिन कहलनि जे लिय'
होइ छै ई जे अइ रोग के दौरान अंदर
टिश्यू सब मे होइत रहै छै भारी टूटफूट
ओ कचड़ा सब खून संग नस मे दौड़ैत फिरैए
खून केँ केने रहैत अछि गढ़गर
एम्हर फेफड़ा के नस सब बड़ बड़ पातर
गढ़गर खून ओकरा लेल भारतुल्य, तें फेफड़ा गड़बड़ाइए
...डाक्टर पंकज सब बात साफ केलनि
कहलनि हँ, इकोस्प्रिन के फैसला नीक फैसला अछि
ई खून केँ पातर बनौने रहत

दू टा आरो दबाइ एन्टीऑक्सिडेन्ट आ एन्टी एलर्जिक जोड़लनि अछि
बड़ बेस, मंगाइयो लेल, शुरुओ क' देल
यैह कम बात नहि जे ऑक्सीजन लेबल ठीक चलि रहल अछि।

तीन

होइत रहय हमही एक वीर छी जे चुपचाप निरखै छी कोरोनाक फूल

मुदा केदार (कानन) सँ आइ गप भेल तँ बूझल
वीरविहीन मही बूझी नै मिथिलाधाम केँ

कैक मास धरि मुंबई मे फँसल छला लॉकडाउन मे
गाम आबै लेल नित्तो रोज कलहन्त करथि
मुंबई मे घरही फुलाएल कोरोना
ओतय सब विकासक बादो संक्रमण रुकबाक नाम नै

दयादृष्टि जखन भेलनि महराज के
कोनो तर्क नै अछि जे पहिने किए ने भेलनि
आ आबे किएक भेलनि
एखन तँ कहियो किच्छु भ' सकैए अचानक
से कृपादृष्टि भेलनि तँ बालेंबच्चें घुरला गाम

पहिने अपना भेला संक्रमित गाम घुरिते मातर
तखन कनियाँ, तखन धियापुता, तखन सासुरक लोक सब तमाम
ओ जे स्त्री छली चिरसखा शैलेश बाबू सन महामना के
चलाचली भ' गेलनि एही संक्रमण अभियान मे
सब टा सम्हारैत रहला केदार, असकरुआ
आ, हम एहन बूड़ि जे होइए हमही एक वीर

कोरोनाक तेरहम दिन

(6 अक्टूबर)

तेरहम दिन भेल आइ, काल्हि चौदहम दिन
कोरेन्टीन के अवधि चौदह दिन, जकर बाद जाँच

नै नै, आब कतय जाँच? जाँच के नियम
तँ पछिला प्रोटोकॉल गाइडलाइन मे रहै
नै नै, एखनो छै, एक टा नै ने, दू दू टा जाँच छै दस दिन पर

अहाँ कहिया के बात करै छी जोगी भाइ
ई नियम रहै तहिया जखन कोरोना इलाज के सब खर्च
सरकार उठबैत रहै, बाहर सँ जहिना कि क्यो आएल
ओकरा कोरेन्टीन कएल जाइक जे पसरय नहि बीमारी
भरि मोन पसरल कोरोना
ई किए कही जे फेल भेल
भ' सकैए यैह रहल होइ निहित उद्देश्य
आ एहि तरहें तँ फर्स्ट क्लास पास भेल,
आब तँ नियम छै जे चौदह दिन घर मे रहू
लक्षण नै अछि तँ आब अहाँ ठीक छी, काज मे लागू
नबका गाइडलाइन मे दोबारा जाँच के कोनो नियम नै छै

नै छै? ई तँ जुलुम बात। कहीं अही दुआरे तँ एते नै पसरल?
के कहत जे आइ के दिन कोन नियम लागू छै?
जहिया जेना जेना भेलै खगता तेना तेना बदललै नियम
खगता? मने, पब्लिक केँ कि सल्तनत केँ!

लेकिन, हम यदि जाँच करबय जेबै अस्पताल तँ नै करत की?
अरे, करत ने किये? लेकिन अहाँ केँ नया केस मानल जाएत
फेर जँ कहीं पकड़ेलहुँ पॉजीटिव
फेर चौदह दिन आबैत रहत स्वचालित फोन
एना होइए तँ एक दबाउ, नै होइए तँ दू दबाउ

अहाँ पॉजीटिव बहराइ कि निगेटिव,
अहाँक जाँच करौने बढ़तै एक और आदमीक संख्या, मने आँकड़ा
क्यो कहैत रहय एक पेशेन्टक जाँच पर
कुल्लम तेरह हजार पाँच सौ रुपैयाक खर्च छै
जते संख्या बढ़तै तते ने नीक जे ओते खर्च हेतै

बुझलहुँ नै जोगीभाइ, खर्च कोना नीक?
आमदनी होइतय तखन ने नीक, खर्च कोना नीक?

अर्थव्यवस्थाक अइ मोड़ पर आबि क' खर्च आ आमदनी
समघटार भ' जाइ छै भाइ,
ओकरा अहाँ अलग अलग नै पकड़ि सकै छियै
की नीक की बेजाय, क्यो नै कहि सकैए
तहिना, जेना संक्रमित के संख्या अधिक सँ अधिक बढ़ायब कोना नीक
से ककरो कहि हेतनि ?

कोरोनाक चौदहम दिन

(7 अक्टूबर)

की कोरोना दोहरा क' भ' सकैए
सौंसे संसारक शंकालु लोकनि जूझि रहल एहि प्रश्न सँ

बहुत पढ़ौनी केलौं अइ पर, डाक्टरो सब केँ पुछलियनि
सार जे दोहरा क' हेबाक जते दृष्टान्त अछि दुनिया भरि मे
दोहराव तीन मासक भीतर भेलैए
डाक्टर उनटा क' छुबै छथि नाक
थ्योरी दै छथि जे तीन मास तक कोरोना छुटिते नै अछि
बीच मे कहियो जँ पाबि लियय सुयोग, प्रकट भ' सकै छै प्रताप

तँ की आब वियोगी जी तीन मास तक लिखैत रहता कोरोना-काव्य ?
एते अत्याचार ने अपना पर ठीक ने पाठक पर
जाथु, काल्हि कराबथु जाँच
की एलनि रिपोर्ट से अहू ठाम कनी सूचित करथु
बाकी पॉजीटिव होथु कि निगेटिव
आब सब टा छार-भार अपना पर लेथु

मृत्यु मे संग जाइत अछि संस्कार, कविता नै
कवितो जतबा उतरल रहैछ संस्कार मे ततबे जाइछ
आब जाँचथु कतबा छनि उतरल कविता संस्कार मे !

कोरोनाक पन्दरहम दिन

(8 अक्टूबर)

एक

बहुत दिन पर घर सँ बहरा क' अस्पताल आएल छी
पैदल नहि रही, गाड़ी पर रही बैसल
मुदा लगातार लगैत रहल जे बीमार छी

एते एते दिन धरि लगातार घर बैसब, बिछौन धरि रहब सीमित
एते एते दिन धरि दू बेर भाफ लेब, तीन बेर करब गार्गिल,
चारि बेर खाएब दबाइ, पाँच बेर पीयब गरम गरम पेय
बीमार करबा लेल एतबो काफी अछि
जखन कि हमरो अचरज अछि, मन हमर बहुत मजगूत अछि
एको क्षण लेल नै कहियो भेलहुँ दलमलित

रिसर्च यैह कहैए जे तीन मास धरि बनल रहत असर
अइ बीच जरूर सक्रिय रहत एन्टी बॉडी
मुदा खतरा सेहो लगातार बरकरार रहत
बहुत लोक मोन पड़ैत छथि जे निगेटिव भेलाक बाद विदा भेला
पंचानन मिश्र तँ अपन घरेक लोक छला,
एहना मे जे देत काज, से निश्चिते मजगूत मने देत
डाक्टर जकाँ उनटा हाथें नाक छूबू
मने कहियौ जे दोहाइ मैया कोरोनाक कि दुरगेक
से भेल अहाँक प्रताप,
कोरोनाक प्रताप अलग चीज होइ छै

दू

आ आखिर
अजुका एन्टीजन टेस्टक रिपोर्ट निगेटिव आएल

खुशी होइ लेल तँ बड़ खुशीक बात

लेकिन मामला एखन तीन मास बचल छै
जे छै से छै
मुदा, कोनो चीज मे निगेटिव पाओल जाएब
कते नीक बात थिक, तकर ज्ञानगुरु कोरोने थिका हमर

कतय सँ चलल छल,
हमही कहियो लिखने रही कविता—
'चीन देस सँ चलल करोना सगर मुलुक मे रहलै छाय
बड़ बड़ वीर घरहि मे थरथर
विश्व-भतारक हालति पातर'
आ कतय हम महिषी गामक एक कार्यकर्ता मजूर
ततय आबि पहुँचल,
निर्मिति जकर थिका तकर सभक साफ हम विपरीत लोक
ने हम तब्लीगी जमात मे ने नमस्ते ट्रंप मे
हम तँ बस ओइ दुनिया मे सीमित जे हमर कार्यक्षेत्र
मुदा, अइ बीस सालक विकास दुनिया केँ क' देलकै ग्लोबल
हम एक मूकदर्शक भुक्तभोगी
हमर विरोधक कोनहु मोजर नै कतहु
कतबो हम बाप बाप करी, हैत वैह जे धनपशु लोकनि चाहता
हमर तँ औकाति एतबे जे धनपशुक कारखाना मे हम एक असामी
हमर जीवनक कोन मोल?

ई दुनिया एहन किएक भेल
के बचाएत अइ दुनिया केँ?
ई सब प्रश्न उठाबी तै सँ नीक कविते केँ आब थैर बैसाबी।
●●●